शिक्षा से स्वावलंबन की ओर

(सहरिया क्षेत्र की बालिकाओं के आत्मनिर्भर होनें की कहानियां)

(From Margins to Mainstream: Education for Sahariya Girls)

MISEREOR
IHR HILFSWERK

ecoedecon

शिक्षा से स्वावलंबन की ओर

(सहरिया क्षेत्र की बालिकाओं के आत्मनिर्भर होनें की कहानियां)

प्रकाशन वर्ष : सितम्बर,2025

प्रकाशक : सिकोईडिकोन
एफ-159-160, सीतापुरा औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर-302022

ई-मेल : cecoedecon@gmail.com

वेबसाईट : www.cecoedecon.org.in

परिकल्पना : टीम सिकोईडिकोन

इस पुस्तक में प्रकाशित सामग्री का उपयोग व वितरण गैर व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए प्रकाशक का संदर्भ देते हुए किया जा सकता है।

बाबूलाल खराड़ी
मंत्री
जनजाति क्षेत्रीय विकास एवं
गृह रक्षा विभाग, राजस्थान सरकार

दूरभाष : 0141-2227538 (कार्या.)
मोबाइल : 7742130961
Email : ministertadraj@gmail.com
कार्यालय: 6206, मंत्रालय भवन,
शासन सचिवालय, जयपुर - 302005

क्रमांक : मं/टीएडी/एच.जी./2025/

दिनांक 9-9-2025

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि सिकोईडिकोन संस्था ने जनसंगठनों के सहयोग से वर्ष 2005 से सहरिया आदिवासी बालिकाओं के लिए आवासीय शिविर की शुरूआत की जिसमें बालिकाओं के लिए निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था एवं उनके उत्कृष्ठ विकास के लिए अन्य कई कार्य भी किये जा रहे है।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि सरकार, सामाजिक संस्थाओं व जन संगठनों के सामूहिक सहयोग से संचालित किए गए आवासीय शिविर में पढ़ने वाली बालिकाएं आज सहरिया समाज में शिक्षा और स्वावलंबन की अलख जगा रही है।

संस्था की ओर से एक पुस्तक "शिक्षा से स्वावलम्बन की ओर" का विमोचन किया जा रहा है। जिसमें संस्था की और से सहरिया बालिकाओं के विकास के लिये किये गये कार्यो एवं बालिकाओं के प्रेरणादायक संघर्ष का संकलन है।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि संस्था इसी प्रकार सामाजिक हित में निरन्तर कार्य करती रहेगी, एक बार पुनः शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(बाबूलाल खराड़ी)
मंत्री

शिक्षा से स्वावलंबन की ओर

(सहरिया क्षेत्र की बालिकाओं के आत्मनिर्भर होनें की कहानियां)

भूमिका

भारत सरकार की 2011 की जनगणना के अनुसार सहरिया समुदाय राजस्थान का चौथा सबसे बडा जनजातिय समुदाय है। बारां जिले की शाहबाद और किशनगंज तहसीलों में सहरिया आबादी का 35 प्रतिशत है। सहरिया जनजाति की आजीविका का प्रमुख साधन खेती-मजदूरी है। सहरिया समुदाय में खेती के अतिरिक्त मजदूरी के लिए पलायन करने की प्रवृत्ति है। फसल कटाई के समय ये समूह में आसपास के राज्यों व जिलों में मजदूरी के लिए पलायन करते हैं। पलायन की वजह से इस क्षेत्र में स्वास्थ्य और शिक्षा बुरी तरह प्रभावित होते हैं। महिलाओं और बच्चों में कुपोषण का कारण कमजोर आर्थिक स्थिति भी है। इसी वज़ह से बच्चों की पढ़ाई भी निरंतर जारी रखना इस समुदाय के लिए मुश्किल होता है। पिछले कुछ सालों से पीएम जनमन सहित सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं व सामाजिक संस्थाओं के प्रयासों से शिक्षा, पोषण, बालिका शिक्षा के प्रति वातावरण निर्माण हुआ है।

सहरिया समुदाय की कठिन सामजिक-आर्थिक स्थितियों में बालिकाओं की शिक्षा सुनिश्चित करना एक बडी चुनौती रही है। सरकार ने सहरिया बालिकाओं के लिए आवासीय विद्यालय शुरु किए मगर जो बालिकाऐं परीक्षा में असफल हो जाती है, उन्हें विद्यालय छोडना पडता था। ऐसे में अधिकांश बालिकाओं के लिए पढ़ाई जारी रखना संभव नहीं हो पाता था।

सिकोईडिकोन संस्था ने जनसंगठनों के सहयोग से वर्ष 2005 से सहरिया आदिवासी बालिकाओं के लिए आवासीय शिविर की शुरुआत की जिसमें बालिकाओं के लिए निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था सुनिश्चित की गई। 2014 में इस कार्यक्रम को और गति मिली जब सरकार ने ड्राप आउट सहरिया बालिकाओं के लिए आवासीय शिविर संचालित करने हेतु वित्तीय सहयोग प्रदान किया।

आवासीय शिविर में अनुभवी शिक्षकों द्वारा दसवीं में अनुतीर्ण ड्रॉप आउट छात्राओं को दसवीं परीक्षा की तैयारी करवाई गई और उन्हें राजस्थान स्टेट ओपन बोर्ड से परीक्षा दिलवाई गई। इस आवासीय शिविर में केवल पाठ्यक्रम ही नहीं बल्कि खेलकूद, व्यायाम, श्रमदान, भ्रमण, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से बालिकाओं को सर्वांगीण विकास के अवसर प्रदान किए गए। शिविर में बालिकाओं को स्वास्थ्य, पोषण, स्वच्छता, पर्यावरण जैसे सामाजिक विकास के विषयों से भी अवगत करवाया गया और जनसंगठनों के साथ होने वाली सामाजिक गतिविधियों में भी भाग लेने का अवसर दिया गया।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि सरकार, सामाजिक संस्थाओं व जनसंगठनों के सामूहिक सहयोग से संचालित किए गए आवासीय शिविर में पढ़ने वाली बालिकाऐं आज सहरिया समाज में शिक्षा और स्वावलंबन की अलख जगा रही है।

हमें आपसे यह साझा करते हुए अत्यंत खुशी है कि आवासीय शिविर में पढ़ाई के उपरांत बड़ी संख्या में बालिकाओं ने सरकारी / गैर सरकारी क्षेत्र में नौकरी प्राप्त कर स्वयं को आत्मनिर्भर बनाया है।

इस पुस्तक के माध्यम से हम ऐसी बालिकाओं की लघु कहानियाँ आप तक पहुंचाने का प्रयास कर रहे हैं, जिन्होंने कठिन परिस्थितियों का सामना कर स्वयं ज्योति बनकर अशिक्षा के अंधेरे को मिटाया है और अपने पैरों पर खडे होकर अन्य बालिकाओं के लिए स्वावलंबन का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

हमें उम्मीद ही नहीं विश्वास है कि इस सामूहिक प्रयास को आगे बढ़ाने और बालिकाओं के भविष्य को बेहतर बनाने में आप सभी का सहयोग हमें निरंतर मिलता रहेगा।

आभार सहित।

मंजू बाला जोशी
सचिव
सिकोईडिकोन

From Margins to Mainstream
Education for Sahariya Girls

Preface

As per Census 2011, Sahariya community is the fourth largest tribal group in Rajasthan. In Shahabad and Kishanganj blocks of Baran district, they constitute nearly 35 percent of the population. Their main livelihood depends on farming and daily wage labor, often migrating seasonally to other districts and states for work. This migration disrupts children's education and severely impacts their health and nutrition. The situation is worsened by extreme poverty, leading to high levels of child malnutrition. Continuing education for children, especially girls, becomes highly challenging.

Since 2005, CECOEDECON, with support from local institutions, initiated a residential school program for Sahariya girls, ensuring access to free and quality education. In 2014, the initiative received a major boost when the government extended financial support to operate the Dropout Girls' Residential School. Here, academically weak girls who had failed in Class 10 were prepared to reappear for the exam through special coaching, and later appeared under the Rajasthan State Open Board.

The residential school was not limited to academics. Alongside classroom teaching, girls engaged in sports, prayers, cultural events, exposure visits, and life-skill sessions. They were also sensitized on key social development issues such as health, hygiene, nutrition, and environment, while actively participating in community-led activities.

It is encouraging to note that many girls educated at the residential school have today become role models in the Sahariya community, breaking barriers of poverty and marginalization through education and empowerment. A significant number of them are now employed in both government and non-government sectors, standing as first-generation learners and professionals.

Through this compilation of short case stories, we aim to bring forward the journeys of such girls who, despite hardships, transformed their lives with education and now inspire many others. We are confident that with collective support, this initiative will grow further and strengthen the future of many more girls.

With best regards,

Manju Bala Joshi
Secretary,
CECOEDECON

अंजू सहरिया

अपने आस-पास की बालिकाओं को पढ़ने और आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करने वाली अंजू सहरिया ने वर्ष 2017 में बालिका शिविर में प्रवेश लिया था। इससे पूर्व अंजू दसवीं में फेल हो चुकी थी। पिता खेती- मजदूरी से परिवार चलाते थे इसलिए अंजू को प्राईवेट ट्यूशन दिला पाना उनके लिए मुश्किल था। बालिका शिविर में प्रवेश लेने के बाद अंजू ने पढ़ाई के अलावा, खेलकूद, व्यायाम के साथ-साथ अनुशासन का पाठ भी सीखा। शिविर में लड़कियों को स्वच्छता, पोषक आहार और नैतिक मूल्यों की शिक्षा भी दी जाती थी। अंजू का कहना है कि शिविर में रहकर पढ़ाई के अलावा रहन-सहन के तौर-तरीके सीखे साथ ही पोषण- युक्त आहार के फायदे भी जाने। अंजू ने दसवीं उत्तीर्ण करने के बाद आंगनबाड़ी सहायिका के लिए आवेदन किया और अपनी योग्यता के आधार पर उसको यह नौकरी प्राप्त हुई। शादी के उपरांत अंजू ढिकवानी में आंगनबाड़ी सहायिका के पद पर कार्यरत है। आज अंजू लड़कियों को पढ़ने और आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित कर रही है।

For Anju Sahariya, poverty was a constant reality. Her family survived on daily labor and small farming, leaving no scope for further studies after class 10. Dropping out left her discouraged, but CECOEDECON's residential school in 2017 in Shahabad brought her back into mainstream education. Hostel life exposed her to discipline, games, and cultural activities, while strengthening her bonds of friendship. Most importantly, her family, once doubtful, saw her progress and realized the value of education for girls. Anju herself grew confident, insisting that she wanted to continue studying. The school rekindled her hope and gave her strength to shape her future. Today, she shares her story to inspire others and is employed as an Anganwadi Helper in Dhikwani, contributing to her family's income and her community's welfare

बबली सहरिया

आठवीं कक्षा पास करने के बाद गांव में सैकण्डरी स्तर का विद्यालय न होने के कारण बबली ड्रॉप आउट हो गई। दो साल बाद बबली ने सरकार के सहयोग से सिकोईडिकोन द्वारा संचालित बालिका शिविर में प्रेवश लिया और वर्ष 2015 में राजस्थान स्टेट ओपन से दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की। बबली के परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। इसी कारण गांव से दूर सैकण्डरी स्कूल में पढ़ने नहीं जा सकी। निःशुल्क आवासीय शिविर में प्रवेश मिलने के बाद बबली को लगा कि अब वह अपने सपने पूरे कर सकती है। आवासीय शिविर का वातावरण और वहां से होने वाली अन्य गतिविधियों में बबली का मन लगने लगा। दसवीं पास करने के बाद बबली का मन था कि किसी रोजगार से जुड़कर अपने परिवार को आर्थिक सहयोग कर सके। चूंकि बबली ने दसवीं परीक्षा पास कर ली थी, अब वह आंगनबाड़ी सहायिका के लिए आवेदन कर सकती थी। किस्मत ने उसका साथ दिया और आज वह मामोनी में आंगनबाड़ी सहायिका के रुप में कार्य कर रही है। बबली चाहती है कि अन्य बालिकाऐं भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर स्वयं को अपने पैरों पर खड़ी करें।

Babli Sahariya's education nearly ended after class 8, since her village had no higher school and her family's financial struggles were overwhelming. For two years she remained away from studies, but her determination led her to CECOEDECON's residential school in Shahabad. The school brought her back into mainstream education, where she excelled academically and enjoyed games, prayers, and hostel activities. Her family, witnessing her growth, began to value education and supported her dream to study further. Babli herself found courage to assert that she would not abandon her education again. This persistence paid off as she completed class 10 successfully. Today, she proudly works as an Anganwadi Helper in Mamoni, showing how education can transform lives and convince families of the power of educating daughters.

भभूती सहरिया

मजदूरी करके अपना पालन-पोषण करने वाली भभूती सहरिया के परिवार में किसी लड़की का दसवीं पास करना बडी बात थी। भभूती अपने पहले प्रयास में असफल रही। किसी परिचित ने उसे बताया कि सिकोईडिकोन संस्था द्वारा दसवीं में अनुत्तीर्ण छात्राओं के लिए आवासीय शिविर चलाया जाता है, जहां योग्य शिक्षकों द्वारा दसवीं की तैयारी करवाई जाती है। भभूती ने वर्ष 2011 में आवासीय शिविर में प्रवेश लिया। यहां पढ़ाई के अलावा होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकूद, व्यायाम में भाग लेने लगी। विभिन्न अवसरों पर होने वाले श्रमदान में भी भभूती भाग लेने लगी और श्रमदान का महत्व समझा। अपनी मेहनत और लगन से भभूती ने राजस्थान स्टेट ओपन से दसवीं की परीक्षा पास की। इसके पश्चात खुशियारा गांव में सहायिका के लिए चयनित हुई। भभूती चाहती है कि सहरिया समुदाय की लड़कियाँ अपनी पढ़ाई बीच में न छोडे और उच्च शिक्षा प्राप्त कर स्वावलंबन की ओर आगे बढ़े।

For Bhabhuti Sahariya, poverty and lack of opportunities meant her education was almost lost after class 10. Her family survived on daily wage labor, leaving little hope for her studies. She always wished to study further but could not until she joined CECOEDECON's residential school in 2011. There, she returned to mainstream education, where discipline, group activities, and learning gave her strength. She loved games, singing, and cultural programs, which helped her regain confidence. Her family, watching her determination, realized the importance of education and supported her aspirations. Bhabhuti also began asserting her right to continue studying, despite social pressures. The residential school transformed her into a confident young woman who knew her worth. Today, she proudly works as an Anganwadi Helper in Khushiyara, proving how education can uplift both individuals and entire families.

भूमिका सहरिया

शाहबाद पंचायत समिति में लिपिक के पद पर कार्यरत भूमिका सहरिया का मानना है कि दसवीं में अनुत्तीर्ण छात्राओं को कभी निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि राजस्थान स्टेट ओपन का विकल्प उनके साथ है। भूमिका ने स्वयं भी दसवीं में अनुत्तीर्ण होने के बाद सिकोईडिकोन द्वारा संचालित आवासीय शिविर में 2013 में प्रवेश लिया और अपनी मेहनत और लगन से न केवल दसवीं की परीक्षा पास की बल्कि पंचायत समिति, शाहबाद में लिपिक के पद पर चयनित भी हुई। मजदूरी से अपना गुजारा करने वाले भूमिका के परिवार में कोई बालिका इस प्रकार पढ़ाई के उपरान्त नौकरी प्राप्त कर सकेगी, यह किसी को उम्मीद नहीं थी। मगर भूमिका ने कर दिखाया। भूमिका का कहना है कि आवासीय शिविर का वातावरण और शिक्षकों के सद्- व्यवहार ने उसे आगे बढ़ने में मदद की। शिविर में सामूहिक प्रार्थना, सामूहिक भोजन, खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम व भ्रमण कार्यक्रम से उसने बहुत कुछ सीखा। भूमिका अपनी सीख को अपने समुदाय की बालिकाओं के साथ साझा कर उन्हें स्वावलम्बी बनने के लिए प्रेरित कर रही है।

Bhumika Sahariya faced a tough childhood marked by poverty and limited opportunities. After failing to clear class 10, she nearly left education, as her family could not afford further studies. Household chores and labor seemed to define her future. Everything changed when she joined CECOEDECON's residential school in 2013, which gave her a second chance at education. The supportive environment, filled with studies, games, and cultural activities, helped her grow into a confident young woman. Her family, who once doubted the benefit of education, saw her progress and realized its importance. With courage, Bhumika asserted her desire to continue studying, and her persistence was rewarded. Today, she inspires younger girls not to abandon learning and is currently employed as a Clerk in the Gram Panchayat of Shahabad, showing how education leads to dignity and independence.

बिन्द्रा सहरिया

बिन्द्रा सहरिया ने गांव के आसपास हॉस्टल की सुविधा उपलब्ध न होने के कारण वर्ष 2010 में दसवीं परीक्षा पास करने के उ`श्य से आवासीय शिविर में प्रवेश लिया। शुरुआत में घर से दूर रहने के कारण बिन्द्रा का मन शिविर में नहीं लगा लेकिन धीरे-धीरे अन्य लड़कियों के साथ शिविर में होने वाली विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने लगीं। शिविर के शिक्षकों का व्यवहार और खुला वातावरण उसे भाने लगा। बिन्द्रा दसवीं पास करके गांव में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता बनना चाहती थी। वह जानती थी कि अपने पांव पर खड़ी होकर ही वह अपने गरीब माता-पिता की मदद कर सकती है। आखिर बिन्द्रा की मेहनत रंग लाई। उसने राजस्थान स्टेट ओपन से दसवीं की परीक्षा पास की। दसवीं पास करने के बाद बिंद्रा इस योग्य थी कि वह आंगनबाड़ी कार्यकर्ता के लिए आवेदन कर सकें, ऐसा हुआ भी। आज बिंद्रा सम्मानपूर्वक सिलोरा में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता के रूप में कार्यरत है। विवाह के पश्चात अब वह अपने परिवार के पालन-पोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। बिंद्रा सभी बालिकाओं से कहती है कि आगे बढ़ो, पढ़ाई से वंचित मत रहो।

Bindra Sahariya grew up in a village where poverty and the absence of proper schooling made education a distant dream. After primary classes, she drifted away from studies and focused on household chores. Yet, her desire to learn never faded. The turning point came when she joined CECOEDECON's residential school in 2010, which reconnected her with mainstream education. At first, she was hesitant, but soon the hostel environment — books, friends, and a safe space to grow — brought out her confidence. For her parents, watching Bindra blossom in this setting was eye-opening; they realized that girls' education could change the family's future. Bindra herself stood firm, choosing education despite hardships. Today, she carries that courage into her work as an Anganwadi Worker in banjara village, Silora where she nurtures children and inspires families to support their daughters' schooling.

दीपेश सहरिया

दीपेश के परिवार पर तब मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा जब उसके पिता का अचानक देहान्त हो गया। उस समय दीपेश कक्षा पांच में पढ़ती थी। उसके तीन बहनें और एक भाई की पढ़ाई और सारे घर की जिम्मेदारी अब दीपेश की मां पर आ गई। कठिन परिस्थितियों में दीपेश दसवीं पास नहीं कर पाई। वर्ष 2018-19 में दीपेश ने सरकार के सहयोग से सहरिया ड्रॉपआउट बालिकाओं के लिए संचालित सिकोईडिकोन के आवासीय शिविर में प्रवेश लिया और यहीं से उसके जीवन ने एक नई दिशा ली। शिविर के सकारात्मक वातावरण और अपनी लगन से दीपेश ने राजस्थान स्टेट ओपन से दसवीं परीक्षा पास की। अब दीपेश पढ़ाई का महत्व समझ चुकी थी। उसने बारां में आवासीय छात्रावास में प्रवेश लेकर 11वीं और 12वीं परीक्षा पास की। 2021 में विवाह के पश्चात वर्ष 2024 में दीपेश का रानीपुरा में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता के रुप में चयन हुआ। आज दीपेश आत्मविश्वास से कहती है कि आवासीय शिविर में दसवीं पास करना मेरे जीवन का टर्निंग पाइंट था।

Deepesh Sahariya lost her father while still in school, and suddenly the weight of survival fell on her mother's shoulders. With limited income, it seemed impossible for her to study further. . Unable to clear class 10 exams, she was almost forced to give up, but CECOEDECON's residential school in 2018 became her lifeline. Supported through the scholarship program, she continued her education with determination, completing higher classes despite difficulties. The residential school offered discipline, encouragement, and a safe space where she could focus on her dreams. Her family, once anxious about her future, began to value education as they saw her resilience. Deepesh proved her strength not just by continuing her studies but by asserting her right to a better future. Today, she is employed as an Anganwadi worker in village Ranipura.

धनिया सहरिया

धनिया सहरिया के पिताजी की मृत्यु के बाद मां ने सरकारी विद्यालय में पोषाहार बनाकर अपने परिवार का पेट पाला। संघर्ष के दिनों में धनिया दसवीं पास करके कुछ काम करना चाहती थी ताकि मां का सहयोग कर सके। पहली बार में दसवीं की परीक्षा पास नहीं हो पाई तो किसी परिचित के सुझाव पर 2011 में सिकोईडिकोन द्वारा संचालित आवासीय शिविर में प्रवेश लिया। यहां किताबों के साथ-साथ खेलकूद में भाग लेने और डिजिटल शिक्षा को समझने का अवसर मिला। लड़कियों के समूह में रहने से नेतृत्व क्षमता का भी विकास हुआ। पढ़ाई के साथ-साथ यहां स्वच्छता, अनुशासन और स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों की भी समझ बनी। कठिन परिश्रम और सकारात्मक स्थानीय वातावरण से धनिया ने दसवीं परीक्षा उत्तीर्ण की और खुद को साबित किया कि कठिन परिस्थितियों में भी साहस और दृढ़ता से मंजिल पाई जा सकती है। दसवीं पास करने के बाद धनिया ने मां बाड़ी केन्द्र में शिक्षिका के पद के लिए आवेदन किया और अन्ततः बाल्दा गांव के मां बाड़ी केन्द्र में उसका चयन हुआ। धनिया की सफलता से उसके परिवार ने भी बालिका शिक्षा के महत्व को समझा। आज धनिया कहती है कि लड़कियों को अवसर मिले तो वे किसी भी क्षेत्र में अपना नाम रोशन कर सकती हैं।

For Dhaniya Sahariya, education nearly slipped away after failing class 10. Her father had passed away, leaving her mother to run the household by cooking meals at a school, and the family could not imagine paying for higher studies. Dhaniya loved reading and dreamed of becoming a teacher, but her path seemed blocked. It was CECOEDECON's residential school in Shahabad that changed her story. The school gave her not only education but also opportunities to play, participate in digital learning, and rebuild her confidence. Her family, impressed by her growth, understood that education was worth the struggle. Dhaniya herself showed resolve, insisting on continuing her studies despite difficulties. Today, she stands as proof of what persistence can achieve and works as a Maa badi kendra, village Balda, fulfilling her dream of guiding the next generation.

ग्यारसी सहरिया

मजदूरी से जीवन यापन करने वाले परिवार में ग्यारसी सहरिया का पढ़ाई जारी रखना बडा मुश्किल था। 10वीं की परीक्षा में असफल होने के बाद यह और भी कठिन हो गया। वर्ष 2015 में ग्यारसी ने सहरिया ड्रॉप आउट बालिकाओं के लिए चलाए जा रहे बालिका शिविर में प्रवेश लिया। अपने घर से दूर होने के कारण शुरु में मन लगना थोड़ा मुश्किल हुआ मगर शिविर में मौजूद अन्य बालिकाओं के प्रोत्साहन और यहां होने वाली विभिन्न गतिविधियों के कारण ग्यारसी घुल-मिल गई। अनुशासन और सहज़ वातावरण में पढ़ाई होने के कारण दसवीं कक्षा उत्तीर्ण की। दसवीं पास करने के बाद ग्यारसी का विश्वास बढ़ा और उसे लगा कि अब वह आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ा सकती है। कुछ समय पश्चात ग्यारसी ने आशा सहयोगिनी के लिए आवेदन किया और इस पद के लिए उसका चयन हो गया। छिछरोनी गांव में आशा सहयोगिनी के रूप में कार्य करते हुए ग्यारसी और उसका परिवार बहुत खुश है। उसके पति भी इस बात से खुश है कि ग्यारसी उनके परिवार में 'शिक्षा की आशा' बनकर आई है।

Gyarsi Sahariya's life was marked by financial hardship, unable to clear class 10 she almost lost hope of studying further. Her family relied on daily wage labor, and her future seemed confined to household responsibilities. Then came CECOEDECON's residential school in 2015, which brought her back into mainstream education. There, she embraced not only academics but also prayers, cultural activities, and games, which gave her confidence and joy. Most importantly, her family, observing her transformation, realized that education was vital for their daughter's progress. Gyarsi herself spoke firmly of her wish to study further and refused to step back. With that determination, she rebuilt her future. Today, she fulfils her aspiration of independence and service by working as an Asha Sahyogini in Chichroni, empowering women and children in her community while inspiring others to value education.

कमला सहरिया

एक मजदूर परिवार में जन्म लेकर डॉक्टर बनने का सपना देखने का साहस रखने वाली कमला सहरिया यद्यपि डॉक्टर तो नहीं बन पाई लेकिन वो मां बाड़ी केन्द्र, गोरधनपुरा में अध्यापिका बनकर बच्चों को बडा सपना देखना सिखा रही है। वर्ष 2007 में सिकोईडिकोन के बालिका शिविर में प्रवेश लिया क्योंकि आस-पास कहीं हॉस्टल की सुविधा उपलब्ध नहीं थी। उसे यह डर था कि अगर हॉस्टल की सुविधा न मिली तो वह शायद ही आगे पढ़ पाएगी मगर बालिका शिविर में प्रवेश के बाद उसकी उम्मीद बंधी। शिविर में शिक्षकों के मार्गदर्शन में नियमित पढ़ाई के साथ-साथ भ्रमण कार्यक्रम, खेलकूद, सामूहिक भोजन और एकसाथ बैठकर टेलीविज़न पर मनोरंजक कार्यक्रम देखना कमला को बहुत अच्छा लगता था। मेहनत और लगन से दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की। आज भी कमला को आवासीय शिविर में बिताए दिन याद करके खुशी मिलती है। आज वो जो कुछ भी है, उसमें आवासीय शिविर का बडा योगदान मानती है। कमला सहरिया का कहना है कि कैसी भी परिस्थितियां जीवन में आए, लड़कियों को पढ़ाई से दूर नहीं होना चाहिए, क्योंकि आत्मनिर्भरता के रास्ते वहीं से खुलते हैं।

Kamla Sahariya's childhood was shadowed by poverty and the absence of nearby schools. With no hostel or proper facilities in her village, she almost lost her chance to study. She longed to learn, but without opportunities, her dreams of becoming a doctor seemed far away. Everything changed when she joined CECOEDECON's residential school in 2007, which brought her back into mainstream education. At the hostel, she experienced the joy of festivals, sports, and television while continuing her studies. Her family, once unsure, began to value education after witnessing her growth. Kamla herself became firm in her resolve to keep studying and not let hardships define her path. Today, she continues to inspire other girls, reminding them not to walk away from education despite difficulties. She has built a dignified career and is now working as a teacher at Maa Balika Centre in Gordhanpura, Baran.

क्रांति सहरिया

अत्यंत गरीबी के हालात में कुछ बनने का, आगे बढ़ने का सोच रखने वाली क्रांति सहरिया को सिकोईडिकोन के कार्यकर्ता से आवासीय शिविर की जानकारी मिली जहां से वह अपनी पढ़ाई जारी रख सकती थी। वर्ष 2008 में शिविर में प्रवेश लिया। पढ़ाई के साथ-साथ यहां होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकूद प्रतियोगिताओं और सामाजिक गतिविधियों में भाग लेना क्रांति को अच्छा लगने लगा। शिविर के दौरान शिक्षकों के मार्गदर्शन में पढ़ाई में रुचि भी बढ़ी। क्रांति अपने जीवन में कुछ ऐसा काम करना चाहती थी जिसमें वो सामज के काम आ सके और अपने पैरों पर खड़ी हो सके। क्रांति को पढ़ते देख, परिवारजनों ने भी पढ़ाई के महत्व को समझा। अपनी लगन और मेहनत से क्रांति आज मुंडियर में आंगनबाड़ी सहायिका के रुप में कार्य कर रही है और बच्चों व समाज को शिक्षा, पोषण के प्रति जागरुक कर रही है।

Kranti Sahariya belonged to a very poor family where the absence of nearby schools nearly ended her education. She spent her days imagining what it would be like to study, while helping with household work. Her life took a turn when she joined CECOEDECON's residential school in Shahabad, which brought her back to mainstream education. At the hostel, she found joy in dance, plays, and celebrations, while gaining confidence in academics. For her parents, seeing her thrive was a revelation — they understood how vital education was for their daughter. Kranti herself became determined, asserting that she would not give up studies again and wanted to achieve something meaningful. With renewed energy, she moved forward with her education and dreams. Today, she stands tall as an Anganwadi helper in Mundiyar, showing other girls in her community that persistence leads to progress.

ललती सहरिया

9वीं कक्षा में अनुत्तीर्ण होने के बाद ललती सहरिया को लगा कि अब वह शायद आगे पढ़ नहीं सकेगी क्योंकि परिवार की आर्थिक स्थिति भी बहुत कमजोर थी। ललती के पिता मजदूरी और थोड़ी बहुत खेती से परिवार का पालन-पोषण कर रहे थे। कठिन परिस्थितियों में सिकोईडिकोन द्वारा संचालित आवासीय शिविर में प्रवेश ने उनके जीवन में आशा का संचार किया। संस्था द्वारा विभिन्न अवसरों पर जनसंगठनों के साथ होने वाले सामाजिक विकास के कामों को देखकर व उनमें भाग लेकर ललती को आत्म संतोष होता था। इसी कारण उसे श्रमदान के कार्यों में भाग लेना अच्छा लगता था। समय मिलने पर ललती पेंटिंग का शौक भी पूरा करती थी। शिविर में पढ़ाई के लिए मिले अच्छे वातावरण और शिक्षकों के मार्गदर्शन से दसवीं कक्षा उत्तीर्ण की। यद्यपि वह अध्यापिका बनने के सपने को पूरा नहीं कर सकी किंतु ढिकवानी में आंगनबाड़ी सहायिका के रूप में सामाजिक सेवा के काम को बखूबी निभा रही है और लड़कियों को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दे रही है।

Lalati Sahariya, from Dhikwani village, had to pause her studies as she was unable to progress beyond class 9. Additionally, Poverty and her family's dependence on labor and farming created further alienation Unsure of how to continue, she often feared her education was over. In 2018, she enrolled in CECOEDECON's residential school in Shahabad, which reconnected her to mainstream education. Lalati enjoyed sports, prayers, cultural programs, and group activities that helped her grow in confidence. Her parents, initially doubtful, witnessed her transformation and began to value education for the first time. Lalati herself asserted her desire to keep learning, refusing to let hardship define her future. She once dreamed of becoming a teacher, and today she has achieved dignity through her work. Lalati is now employed as an Anganwadi Helper in Dhikwani, supporting children and inspiring other families to believe in girls' education.

लक्ष्मी सहरिया

समुदाय में बच्चों को पढ़ो, बढ़ो और काबिल बनो का संदेश देने वाली लक्ष्मी सहरिया जब पहली बार दसवीं में फेल हुई तो उसे निराशा हुई मगर हिम्मत नहीं हारी। वर्ष 2018 में जब सरकार के सहयोग से सिकोईडिकोन द्वारा संचालित आवासीय शिविर में लक्ष्मी ने प्रवेश लिया और यहां के जीवंत वातावरण को देखा तो उसे लगा कि वह यहां से निश्चित ही दसवीं की परीक्षा पास कर सकेगी और ऐसा ही हुआ। पढ़ाई के साथ-साथ संस्था में जनसंगठनों के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, पोषण जैसे विषयों पर होने वाले सामाजिक आयोजनों में भाग लेने से सामाजिक मुद्दों की भी समझ बनी। दसवीं की परीक्षा पास करने के बाद लक्ष्मी अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती थी। जल्दी ही उसे यह अवसर मिला और ढिकवानी में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता के रुप में चयनित हुई। लक्ष्मी को काम करते देख अब समुदाय में भी शिक्षा के महत्व के प्रति जागरुकता बढ़ी है और लड़कियों की शिक्षा के महत्व को समझा जाने लगा है।

Laxmi Sahariya of Dhikwani village almost ended her education after she was unable to progress beyond class 10, as her family's farming and labor income barely sustained them. Higher studies seemed like an impossible dream. In 2018, she joined CECOEDECON's residential school in Shahabad, which became the turning point of her life. At the hostel, she loved playing games, singing devotional songs, and taking part in motivational activities. This nurturing environment rekindled her will to learn. Her family, once hesitant, realized the true value of education after seeing her confidence and achievements. Laxmi herself became determined, asserting that she would study further despite hardships. Today, she fulfils her dream of contributing to society by working as an Anganwadi Worker in village Dhikwani, where she supports children and motivates parents to prioritize their daughters' schooling.

ममता सहरिया

गांव में शिक्षा की व्यवस्था न होने के कारण ममता सहरिया ने शाहबाद में सिकोईडिकोन द्वारा संचालित आवासीय बालिका शिविर में वर्ष 2013 में प्रवेश लिया। ममता के परिवार की आमदनी खेती-बाड़ी पर ही निर्भर थी इसलिए बालिका शिविर में निःशुल्क प्रवेश से किसी प्रकार का बोझ परिवार पर नहीं पड़ा। ममता की आवासीय शिविर में पढ़ाई और अन्य सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियों से परिवारजन भी खुश थे कि एक सुरक्षित माहौल में रहकर ममता बहुत कुछ सीख रही है। पढ़ाई के उपरांत ममता चाहती थी कि वह अपने पैरों पर खड़ी होकर अपनी पहचान बनाए। शुरु में ममता ए.एन.एम. बनना चाहती थी। वह प्रयास करती रही और आंगनबाड़ी सहायिका के रुप में उसका चयन हुआ। हथवारी गांव में अपनी सेवाएं देते हुए ममता अपने समुदाय की लड़कियों और महिलाओं को यही संदेश देती है कि समस्याओं से डरो नहीं, बल्कि उनका सामना करो और अपना रास्ता खुद बनाओ।

Mamta Sahariya, from Hathwari village, grew up where schools were absent, and poverty tied her family to farming. Education seemed beyond reach, until in 2013 she joined CECOEDECON's residential school in Shahabad. For the first time, she could focus on learning in a safe, supportive environment. She loved playing children's games, taking part in cultural programs, and singing devotional songs, which gave her both joy and confidence. Her parents, initially doubtful, realized through her progress that education was not a burden but a chance for a better future. Mamta herself asserted her right to study, dreaming of becoming a nurse or joining the police force. She overcame barriers with resilience and continued her education. Today, she stands as an example of courage, working as an Anganwadi Helper in Hathwari, while encouraging other girls to move ahead despite challenges.

मीना सहरिया

परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति और पिता की बीमारी के कारण मीना सहरिया जल्द से जल्द अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती थी। मीना की मां मजदूरी करके अपना घर चलाती थी। बालिका शिविर में प्रवेश के बाद यहां मिले सकारात्मक वातावरण से मीना का आत्मविश्वास बढ़ा। यहां पढ़ाई के साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम और खेलकूद प्रतियोगिताओं में भाग लेने से मीना में नेतृत्व क्षमता का भी विकास हुआ। मीना के परिवारजनों को भी मीना की शिक्षा और समग्र विकास से संतोष हुआ। अपनी पढ़ाई के दम पर आज मीना माँ बाडी केन्द्र, मंझारी में शिक्षिका के पद पर कार्यरत है और बच्चों को शिक्षा से स्वावलम्बन का पाठ पढ़ा रही है।

Meena Sahariya, from Manjhari village, belonged to a family where poverty and her father's illness left them struggling for survival. Her mother worked as a laborer to keep the household running. In 2008, Meena studied at CECOEDECON's residential school in Shahabad, which became her safe haven. She enjoyed cultural activities, prayers, and group games, while the hostel environment gave her the confidence to pursue studies seriously. For her family, sending Meena to the residential camp was eye-opening; they began to understand the importance of education. Meena herself became determined, dreaming of a small job that would allow her to support her parents and contribute to the family. She kept asserting her will to study further, refusing to give up. Today, she has fulfilled that promise and works as a teacher at Maa Balika Centre in Manjhari, inspiring others to believe in girls' education.

प्रिया सहरिया

शिक्षक पिता की बेटी प्रिया सहरिया ने दसवीं कक्षा में अनुत्तीर्ण होने के बाद वर्ष 2017 में सरकार के सहयोग से संस्था द्वारा संचालित सहरिया ड्रॉपआउट बालिका शिविर में प्रवेश लिया। प्रिया अपनी पढ़ाई को रोकना नहीं चाहती थी बल्कि वह भी अपने पिता की तरह अध्यापिका बनकर खुद को साबित करना चाहती थी। शिविर में प्रवेश के उपरांत प्रिया ने पढ़ाई के साथ- साथ सिकोईडिकोन में जन संगठनों के साथ होने वाली सामाजिक गतिविधियों को भी देखा और पोषण, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण जैसे सामाजिक विकास के कार्यो को भी समझने लगी। प्रिया का राजस्थान स्टेट ओपन से दसवीं का फार्म भरवाया गया। अपनी मेहनत और लगन से प्रिया ने शिक्षकों के मार्गदर्शन में दसवीं परीक्षा उत्तीर्ण की। दसवीं पास करने के बाद प्रिया राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, केलवाड़ा में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के रुप में चयनित हुई। प्रिया का कहना है कि 10वीं फेल बालिकाओं के लिए राजस्थान स्टेट ओपन का विकल्प उनके सपनों को पूरा करने में बहुत मददगार है।

Priya Sahariya, from Ghensua village, always wished to study, but poverty and lack of opportunities held her back. Her father was a teacher, but resources at home were limited, and she feared her education would stop after she was unable to clear class 10. In 2017, she joined CECOEDECON's residential school in Shahabad, which brought her back to mainstream learning. She loved games, cultural programs, and motivational sessions, which gave her confidence and joy. The supportive hostel atmosphere also showed her family that educating girls could transform their lives. Priya herself asserted her desire to continue, declaring that she wanted to become a teacher. She worked hard, overcoming barriers, and turned her ambition into reality. Today, she proudly serves as a fourth-grade employee at a Mahatma Gandhi Government School in Kelwada, while reminding other girls that education is the key to independence.

प्रियंका सहरिया

पढ़-लिखकर नौकरी करने का सपना देखने वाली प्रियंका सहरिया के लिए निरंतर पढ़ाई जारी रखना आसान नहीं था क्योंकि गांव के आसपास कहीं आवासीय विद्यालय की सुविधा उपलब्ध नहीं थी। जब सिकोईडिकोन द्वारा शाहबाद में चलाए जा रहे आवासीय शिविर के बारे में सुना तो प्रियंका को आशा बंधी। वर्ष 2007 में प्रियंका ने बालिका शिविर में प्रवेश लिया। मजदूरी पर परिवार चलाने वाले पिता को भी संतोष हुआ कि सुरक्षित वातावरण में प्रियंका की पढ़ाई हो सकेगी। प्रियंका शिविर में पढ़ाई के साथ-साथ खेल- कूद, व्यायाम, प्रार्थना व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी भाग लेने लगी। समूह में बालिकाओं के साथ पढ़ने, खेलने और अन्य गतिविधियों में भाग लेने से प्रियंका का आत्म विश्वास बढ़ा और पढ़ाई निरंतर जारी रखी। आज प्रियंका चौराखाड़ी में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता के रूप में कार्य कर रही है और समाज में बालिका शिक्षा के महत्व को समझा रही है।

Priyanka Sahariya grew up in a family where survival depended on daily wage labor, and education seemed like a luxury. With no proper school nearby, she was at risk of dropping out after she was unable to progress in class 10 exams. Her fortunes changed when she joined CECOEDECON's residential school in Shahabad in 2007, which brought her back into mainstream education. At the hostel, she enjoyed prayers, games, and cultural activities, along with social awareness programs that built her confidence. Her parents, who once saw education as unnecessary, realized its value after observing her progress. Priyanka herself became firm in her decision to study further, expressing her dream of securing a job to support her family. With persistence, she made that dream real. Today, Priyanka proudly works as an Anganwadi Worker in Chhorakhadi, inspiring girls in her village to pursue their education with determination.

रामसुखी सहरिया

गांव में शिक्षा की सुविधाऐं और माहौल के अभाव में रामसुखी सहरिया के लिए अपनी शिक्षा को निरन्तर जारी रखना संभव नहीं लग रहा था। ऐसी स्थिति में शाहबाद में चलाया जा रहा आवासीय शिविर आशा की किरण लेकर आया। वर्ष 2005 में रामसुखी ने शिविर में प्रवेश लिया खेती-मजदूरी पर जीवनयापन करने वाले रामसुखी के परिवार को भी शिविर का सुरक्षित वातावरण देखकर संतोष हुआ। शिविर में मिले सुखद और सुरक्षित वातावरण में रामसुखी के सपनों को पंख लगे। रामसुखी ने शिविर में अनुशासन, सहभागिता, त्याग जैसे मूल्यों का महत्व सीखा। रामसुखी यहां व्यायाम, खेलकूद, प्रार्थना व सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने लगी। अपनी मेहनत और लगन से रामसुखी आज ग्राम बीची में मां बाड़ी केन्द्र पर अध्यापिका के रुप में कार्यरत है। रामसुखी अपने समुदाय व महिलाओं को अपने पैरों पर खड़े होने और दूसरों पर निर्भर न होने के लिए प्रेरित कर रही है।

From Bichi village, Ramsukhi Sahariya's early years were overshadowed by poverty and the absence of proper schools. Household work and labor seemed to decide her fate, leaving little space for learning. In 2005, she enrolled in CECOEDECON's residential school in Shahabad, which changed her path. Hostel life brought her back to mainstream education, where she enjoyed prayers, cultural activities, and community games. She also cherished learning to sew clothes, a skill she practiced during her stay. Watching her confidence grow, her family began to understand the importance of educating daughters. Ramsukhi asserted her desire to become a teacher, refusing to accept limitations. Today, she fulfills that dream—she serves as a teacher at Maa Balika Centre in Bichi, guiding children with the same dedication that once lifted her from the cycle of poverty.

रामवती सहरिया

किशनगंज तहसील के गरड़ा गांव में जन्मी रामवती सहरिया का बपचन विकट सामाजिक, आर्थिक कठिनाईयों से गुजरा। मगर कठिनाईयों ने रामवती को कमज़ोर नहीं बल्कि मजबूत और साहसी बनाया। प्रारम्भिक शिक्षा राजकीय कन्या छात्रावास से करने के बाद दसवीं में रामवती अनुत्तीर्ण हो गइ। ड्रॉप आउट छात्राओं के लिए सरकार के सहयोग से सिकोईडिकोन द्वारा चलाए जा रहे बालिका शिविर की जानकारी मिलने पर वर्ष 2014 में प्रवेश प्राप्त किया और यहाँ के वातावरण में घुल-मिल गई। शिविर से दसवीं का स्टेट ओपन से फार्म भरा और दसवीं परीक्षा पास की। अपनी पढ़ाई निरन्तर जारी रखते हुए रामवती ने राजकीय कन्या छात्रावास से मुख्यधारा में जुड़कर 12वीं परीक्षा पास की। रामवती अब अपने पैरों पर खड़ी होकर समाज के लिए मिसाल कायम करना चाहती थी। वर्ष 2017 में रामवती का पुलिस कांस्टेबल के पद पर चयन हुआ और गांव की पहली सरकारी नौकरी वाली महिला बनी। अपने संघर्ष को याद करते हुए वह कहती है कि आत्मविश्वास और लगन से कुछ भी हासिल किया जा सकता है।

Ramvati Sahariya, from Khankhara village in Baran district, endured childhood in a community marked by poverty and vulnerability. She was unable to complete class 10 in 2013–14 and later CECOEDECON's residential school in Kishanganj (2014–15), which reconnected her with mainstream education. At the hostel, she found joy in studying, games, and cultural programs, and soon her family realized the value of education. She persisted, completing class 12 and preparing for government exams. In 2017, her efforts were rewarded when she was selected in the Rajasthan Police after clearing the state recruitment exam. Later, she married in Khakhada village, becoming the first woman from her community to hold a government job. Ramvati proudly recalls that CECOEDECON's support shaped her resilience. Today, she works as a Constable in the Rajasthan Police, motivating girls in her village to rise above hardships.

रीना सहरिया

''पढ़ूंगी तभी नौकरी कर पाऊंगी'', यही सोचकर रीना सहरिया ने दसवीं में अनुत्तीर्ण होने के बाद बालिका शिविर में 2015 में प्रवेश लिया। बालिका शिविर में अन्य समूह की लड़कियों के साथ खेलकूद, व्यायाम, अन्ताक्षरी जैसे कार्यक्रमों में भाग लेने से सहभागिता की भावना का विकास हुआ। सिकोईडिकोन संस्था में जन संगठनों के साथ होने वाले सामाजिक विकास के काम भी देखने का अवसर मिला। रीना ने यहां के अनुकूल व सुरक्षित वातावरण में मन लगाकर पढ़ाई की और स्टेट ओपन से दसवीं परीक्षा पास की। दसवीं की योग्यता हासिल करने के बाद रीना जगदीशपुरा में आंगनबाड़ी सहायिका के पद पर चयनित हुई। रीना का परिवार जो खेती-मजदूरी पर जीवन-यापन करता है, रीना की उपलब्धी से बहुत खुश है। रीना अब अपने समाज में बालिकाओं की शिक्षा और स्वावलंबन की अलख जगा रही है।

Reena Sahariya, from Jagdishpura village, grew up in a family burdened by farming and wage labor. After she was unable to complete class 10, her education seemed to end, as survival took priority over learning. In 2015, she entered CECOEDECON's residential school in Shahabad, which revived her hope. The hostel gave her time for studies while also engaging in prayers, cultural activities, and sports. She especially loved playing kabaddi, which built her confidence and teamwork skills. Witnessing her dedication, her family realized the importance of education and began encouraging her. Reena herself grew determined, asserting her wish to study further and become independent. She once dreamed of becoming a nurse, but her journey led her to a meaningful role close to her community. Today, Reena is employed as an Anganwadi helper in Jagdishpura, where she serves families and motivates girls not to give up on education.

रेशमा सहरिया

रंगोली बनाने का शौक रखने वाली रेशमा सहरिया ने कठिन परिस्थितियों के बावजूद अपने जीवन में खुशियों के रंग भरे। वर्ष 2008 में बालिका शिविर में प्रवेश लिया क्योंकि गांव में आसपास कहीं शिक्षा व हॉस्टल की सुविधा उपलब्ध नहीं थी। परिवार खेती-मजदूरी पर आश्रित था। ऐसी स्थिति में बालिका शिविर का सुरक्षित वातावरण रेशमा के लिए जीवन बदलने का अवसर साबित हुआ। शिविर में अन्य बालिकाओं के साथ समूह में रहना, खेलना, व्यायाम, रंगोली प्रतियोगिता में भाग लेना जैसे अनुभवों से रेशमा ने बहुत कुछ सीखा। शिविर में पढ़ाई के साथ-साथ स्वच्छता, पर्यावरण, वृक्षारोपण व महिला सशक्तिकरण पर होने वाले सामाजिक विकास के कार्यो को भी देखने-समझने का अवसर मिला। पढ़ाई के उपरांत रेशमा का चयन बैंहटा में आंगनबाड़ी सहायिका के रूप में हुआ। रेशमा को अपने पैरों पर खड़ी देख उसके परिवारजन बहुत खुश हैं और चाहते हैं कि अन्य लड़कियां भी शिक्षा की ज्योति से समाज को इसी प्रकार रोशन करें।

Reshma Sahariya, from Benhata village, had little access to schools nearby, and her family's survival depended on farming and labor. She was unable to clear class 10 and thought her education would end, but in 2008, she joined CECOEDECON's residential school in Shahabad. The hostel environment gave her the freedom to study, while also enjoying games, painting competitions, and cultural activities. She especially loved rangoli making, which nurtured her creativity. Gradually, her family realized that education could change her future and supported her decisions. Reshma asserted her will to study further and dreamed of becoming a nurse. Though her journey was difficult, she never let go of her determination. Today, she is employed as a Health Worker in Benhata, using her skills to help her community and serving as an inspiration to other girls from her village.

रोशनी सहरिया

दसवीं परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने के बाद रोशनी निराश जरूर हुई मगर अपनी पढ़ाई को जारी रखना चाहती थी। इसी उदेश्य से वर्ष 2015 में सरकार के सहयोग से सिकोईडिकोन द्वारा ड्राप आउट बालिकाओं के लिए संचालित आवासीय शिविर में प्रवेश लिया। शिविर में शिक्षकों के मार्गदर्शन में रोशनी ने लगन से पढ़ाई की। पढ़ाई के साथ-साथ अन्य विभिन्न गतिविधियों में भी भाग लेने का मौका मिला, जिससे रोशनी का आत्मविश्वास बढ़ा। चाहे सामूहिक भ्रमण में जाना हो या खेलकूद प्रतियोगिता हो, रोशनी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने लगी। अपनी मेहनत और बेहतर वातावरण की बदौलत रोशनी ने दसवीं परीक्षा पास की। यद्यपि रोशनी अध्यापिका बनना चाहती थी मगर उसका चयन ए.एन.एम. के पद पर हो गया। वर्तमान में देवरी के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पर अपनी सेवाएं दे रही है। रोशनी और उसका परिवार उसकी उपलब्धी से बहुत खुश है और बालिकाओं की उच्च शिक्षा के प्रति समुदाय को जगाने का काम कर रहा है।

Roshani Sahariya, from Khanmatha village, was unable to clear class 10 and lacked opportunities to continue due to poverty and limited facilities. In 2015, she joined CECOEDECON's residential school in Shahabad, which brought her back into mainstream education. At the hostel, she enjoyed prayers, festivals, and journeys for exposure, alongside her studies. She particularly loved cultural programs, which gave her the courage to perform before others. Her parents, once doubtful, saw her growth and came to value education deeply. Roshani herself grew firm in her resolve to continue, declaring she wanted to become a teacher. With persistence, she achieved her goal and secured higher education. Today, Roshani is working as an ANM at Public health centre, Devri, fulfilling her dream while motivating other young girls to pursue education for independence and dignity.

सम्पत सहरिया

राजस्थान पुलिस में भर्ती होने का सपना देखने वाली सम्पत सहरिया पुलिस की नौकरी तो नहीं पा सकी मगर बारां में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के रूप में काम करते हुए अपने परिवार को आर्थिक मदद भी कर रही है और समाज में सम्मान भी पा रही है। सम्पत ने वर्ष 2007 में बालिका शिविर में प्रेवश लिया और यहीं से उसके जीवन ने दिशा बदल ली। अपने पैरों पर खड़े होने और समाज में बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने का महत्व उसे बालिका शिविर में आकर ही समझ आया। यहां पर पढ़ाई के अलावा शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर रखने की विद्या भी सीखा। सम्पत अपने समाज और गांव की बालिकाओं को राजस्थान स्टेट ओपन से परीक्षा पास करने के विकल्प को सुझाती है और उच्च शिक्षा प्राप्त कर आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा देती है।

Sampat Sahariya, from Bhanwargarh, belonged to a family where farming was the only livelihood and poverty was a daily reality. With no secondary school nearby, her education was interrupted, and she feared she would never study again. In 2007, she entered CECOEDECON's residential school in Shahabad, where she reconnected with mainstream education. Hostel life provided structure, discipline, and holistic exposure through activities like debates, cultural programs, and computer learning. Sampat particularly loved playing football, which fostered her confidence and teamwork. Her parents, observing her progress, began to value education as a pathway for socio-economic mobility. Sampat herself asserted her desire to study further and aspired to join the police. Today, she is employed as an Assistant in Govt. Sr. Secondary School, Baran, proving how access to education can break intergenerational cycles of poverty and create agency for women in marginalized communities.

सावित्री सहरिया

सावित्री सहरिया शाहबाद तहसील के गणेशपुरा गांव की निवासी है। यहाँ निवास करने वाले सहरिया परिवारों की आजीविका का मुख्य साधन मजदूरी और खेती है। 10वीं में अनुत्तीर्ण होने के बाद वर्ष 2014- 15 में सावित्री ने दसवीं पास करने के उ`श्य से आवासीय शिविर में प्रवेश लिया। सावित्री का कहना है कि आवासीय शिविर में अनुशासन सर्वोपरि था। नियमित समय पर कक्षा लगती थी और कक्षा से बाहर रहने की छूट नहीं थी। शिविर में मिलने वाले पोषणयुक्त आहार, प्रार्थना, सांस्कृतिक कार्यक्रम से सभी को सीखने को मिलता था। अपनी मेहनत और लगन से सावित्री ने स्टेट ओपन से दसवीं पास की। दसवीं पास करने से उसका आत्मविश्वास बढ़ा और आगे चलकर शिक्षा की मुख्यधारा से जुड़कर राजकीय सहरिया कन्या छात्रावास से 12वीं पास की। वर्ष 2017 में सावित्री पुलिस कांस्टेबल पद के लिए चयनित हुई। कांस्टेबल बनने के बाद भी सावित्री ने पढ़ाई जारी रखी और एम.ए. तक शिक्षा पूरी की। बारां में कांस्टेबल पद पर सेवाएं दे रही सावित्री का शिक्षा से स्वावलंबन का साहसिक सफर, सहरिया बालिकाओं में आशा की किरण का संचार कर रहा है।

Savitri Sahariya, from Ganeshpura village in Shahabad block, grew up in a marginalized community where most families survived on farming and daily wage labor. Education was often a distant dream. After primary classes, she studied at CECOEDECON's residential school in Shahabad from 2014–15, where she continued her studies after almost discontinuing. The hostel offered a safe and inclusive learning environment with structured schedules, nutritious food, and extracurricular opportunities. Savitri enjoyed cultural programs, prayers, and sports, which nurtured her resilience and leadership skills. Her parents, once unconvinced, realized that education could uplift their daughter and transform the family's future. Savitri herself became more determined, pushing against gender norms to pursue higher education. Today, she works as a Constable in the Rajasthan Police, Police Station at Anta, demonstrating how timely interventions in education can promote gender equity and long-term empowerment in vulnerable communities.

शकुंतला सहरिया

बचपन में पुलिस थाने के बाहर से निकलते हुए शकुंतला के मन में भी आता था कि वह भी कभी पुलिस की वर्दी पहनें। हौसले बुलंद हो तो संसाधनों की कमी और गरीबी भी मंजिल तक पहुंचने में रुकावट नहीं बनते। 9वीं में अनुत्तीर्ण होने के बाद शकुंतला ने वर्ष 2015 में आवासीय बालिका शिविर में प्रवेश लिया। शिक्षा के अलावा शकुंतला को दौड़ लगाना बहुत पसंद था। आगे चलकर अपनी मेहनत और आत्मविश्वास से शकुंतला ने न केवल दसवीं पास की बल्कि पुलिस कांस्टेबल बनकर अपना, सपना भी पूरा किया। मांगरोल पुलिस थाने में कार्यरत शकुंतला ने जीवन की दौड़ में संघर्षों, बाधाओं को पार कर एक विजेता के रुप में खुद को साबित किया। शकुंतला का मानना है कि शिक्षा ही आत्मनिर्भरता की कुंजी है। इसलिए लड़कियों को उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपने सपनों को पूरा करना चाहिए।

Shakuntala Sahariya, from Mamoni village in Shahabad, faced severe economic hardship while growing up. Poverty almost forced her out of school after class 9, and her family had little hope of continuing her studies. In 2015, she joined CECOEDECON's residential school in Shahabad, which re-integrated her into formal education. Hostel life provided exposure to sports, cultural programs, and awareness sessions, which she greatly enjoyed. Her family, seeing her newfound confidence, realized that educating daughters was a strategic investment, not a liability. Shakuntala herself aspired to join the police force, inspired by the discipline and courage she developed at school. With consistent effort, she pursued higher studies and later joined the Rajasthan Police as a Constable at Mangrol Police Station. Today, she embodies resilience and empowerment, serving as a role model for girls in her community striving for dignity and equality.

शिमला सहरिया

''कभी हार न माने'' को अपने जीवन का मूलमंत्र मानने वाली शिमला सहरिया ने परिवार में संसाधनों की कमी, गरीबी के हालात और गांव में शिक्षा की सुविधा न होने के कारण वर्ष 2008 में आवासीय शिविर में प्रवेश लिया और अपनी शिक्षा को जारी रखा। आज अपनी शिक्षा के कारण ही शिमला आंगनबाड़ी कार्यकर्ता के रूप में ईसाटोरी में काम कर रही है। शिमला के परिवार के सदस्यों ने भी बालिका शिक्षा के महत्व को समझा और शिमला के पैरों पर खड़े होने से खुश हैं। शिमला अध्यापिका बनना चाहती थी मगर ईसाटोरी में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता के रूप में नन्हें बच्चों को पढ़ाना उनके पोषण के प्रति महिलाओं को जागरूक करना और साथ ही बालिकाओं की शिक्षा के प्रति जागरुकता का काम बखूबी निभा रही है।

Shimla Sahariya, from Isatori village, grew up in a family where poverty and lack of schools curtailed her childhood aspirations. For years, she remained out of mainstream education until 2008, when she joined CECOEDECON's residential school in Shahabad. Hostel life reconnected her with studies and gave her space to enjoy cultural events, excursions, and competitions. She especially loved writing, games, and prayers, which fostered confidence. Her family gradually realized that education was not just an expense but an investment in the future. Shimla, once hesitant, began to assert her dream of becoming a teacher and continued her education with determination. Today, she has fulfilled her goal—she proudly works as a Anganwadi Worker in Isatori village, mentoring children and showing her community that education can transform lives and enable long-term socio-economic mobility.

शोभा सहरिया

शोभा सहरिया ने दसवीं अनुत्तीर्ण होने के बाद 2014-15 में सरकार के सहयोग से संचालित आवासीय शिविर में प्रवेश लिया। शोभा का कहना है कि शिविर में अध्ययन के साथ-साथ हमें पुलिस थाना, पंचायत समिति, डाकघर, एडीएम कार्यालय का भ्रमण भी करवाया गया, जहां हम समझ सके कि सरकारी विभाग किस प्रकार कार्य करते हैं। शिविर में रहते हुए ही आत्मनिर्भर होने का महत्व समझ आया और शोभा ने तय किया कि वह भी अपने पैरों पर खड़ी होकर दिखाएगी। अपनी मेहनत और लगन से शोभा ने दसवीं पास की और आगे चलकर किशनगंज कन्या छात्रावास से 12वीं की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। वर्ष 2017 में शोभा का आत्मनिर्भर होने का संकल्प पूरा हुआ जब उसका चयन पुलिस कांस्टेबल के पद पर हुआ। सीसवाली पुलिस थाने में कार्यरत शोभा, उन सभी सहरिया बालिकाओं के लिए प्रेरणा स्रोत है जो शिक्षा से स्वावलंबन की ओर बढ़ना चाहती है।

Shobha Sahariya, from Mimsai village in Baran district, belonged to a marginalized family where farming and daily wage labor shaped everyday survival. After completing class 10 in 2013–14, she almost lost her path, but in 2014–15 she enrolled in CECOEDECON's residential school in Shahabad. The hostel gave her not only academics but also exposure to government institutions through exposure visits, prayers, and structured activities. Shobha particularly loved debates and learning to speak confidently. Her parents, witnessing her transformation, began to understand the importance of girls' education as a driver of empowerment. Shobha herself grew determined, asserting that she would not stop until she achieved something meaningful. In 2017, she was selected as a Constable in Rajasthan Police. Today, Shobha proudly serves in the force, proving that education and resilience can break cycles of marginalization and foster gender equity.

सोमवती सहरिया

स्कूल जाने वाले बालक-बालिकाओं को देखकर सोमवती सहरिया का भी स्कूल जाने का मन करता था मगर गांव के आसपास शिक्षा व हॉस्टल की व्यवस्था न होने के कारण उसके लिए पढ़ाई जारी रख पाना मुश्किल था। ऐसे में सिकोईडिकोन द्वारा संचालित बालिका आवासीय शिविर सोमवती के लिए आशा की किरण बनकर आया। वर्ष 2008 में शिविर में प्रवेश लिया और यहीं से सोमवती के सपनों ने उडान भरी। परिवारजन भी सिकोईडिकोन में मिलने वाले सुरक्षित वातावरण से संतुष्ट थे। शिविर में पढ़ाई के अलावा होने वाले योगा, प्रार्थना, व्यायाम और खेलकूद सोमवती को बहुत भाते थे। सोमवती ने अनुशासित वातावरण में दसवीं परीक्षा उत्तीर्ण की। उसका सपना नर्सिंग कर ए एन एम बनने का था। मगर आज वह मडी साभरसिंगा में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता बनकर भी खुश है क्योंकि इससे वह आर्थिक रुप से तो आत्मनिर्भर है ही साथ ही बच्चों की शिक्षा व पोषण के प्रति जागरुक करने का अवसर भी मिल रहा है।

Somwati Sahariya, from Madi Sambharsingha village, faced the burden of poverty in a family dependent on farming and labor. With no nearby school, her dream of education almost ended. In 2008, she entered CECOEDECON's residential school in Shahabad, where she found hope again. Hostel life gave her opportunities to study alongside enjoying yoga, debates, and cultural programs. She especially loved prayers and community celebrations. For her parents, sending Somwati to the hostel was eye-opening; they realized education could change not only their daughter's life but also the family's prospects. Somwati herself asserted her right to continue and dreamed of becoming a nurse. With persistence, she overcame obstacles and achieved employment. Today, she works as an Anganwadi Worker in Madi Sambharsingha village, serving children and demonstrating how education fosters agency and sustainable livelihoods for marginalized girls.

उमा सहरिया

खेलकूद में विशेष रुचि रखने वाली उमा सहरिया अपने मजदूर माता-पिता की आर्थिक मदद के लिए नौकरी करना चाहती थी। इसके लिए दसवीं पास करना जरूरी था। पहली बार दसवीं में फेल होने के बाद बालिका शिविर में प्रवेश लिया। यहां शिक्षकों का मार्गदर्शन व सहयोग मिला। साथ ही खेलकूद, श्रमदान, भ्रमण के भी खूब अवसर मिले। उमा ने दसवीं की परीक्षा सफलतापूर्वक उत्तीर्ण की। अब वह कुछ करना चाहती थी क्योंकि वह जानती थी कि केवल मजदूरी से घर नहीं चलता। आखिर किस्मत ने साथ दिया और वन रक्षक के पद पर उमा चयनित हुई। हानोतिया में वन रक्षक के रुप में उमा आज आत्मनिर्भर है और शादी के उपरांत उसके पति भी उसकी उपलब्धि से खुश है। वह कहती कि ''यह इसलिए संभव हुआ क्योंकि मैं पढ़ सकी।'' उमा अपने समाज की बालिकाओं को भी यही संदेश देती है कि ''मजदूरी से परिवार को बाहर निकालना है तो पढ़ाई जारी रखें।''

In 2011, Uma Sahariya from Mundiyar village in Shahabad block found herself on the verge of dropping out after she was unable to clear class 10. Her family, tied to farming and wage labor, could not imagine supporting further studies. At that time, she enrolled in CECOEDECON's residential school in Shahabad, which gave her a second chance. Hostel life offered structured learning alongside opportunities for sports, wall painting, and cultural events she thoroughly enjoyed. For her, these activities were more than recreation—they built resilience and courage. Seeing her progress, her family gradually realized that education could become a pathway to empowerment. Uma herself remained steadfast, asserting that she would secure dignified employment. Her perseverance has paid off: today she serves as a Forest Guard in Hanotia, Shahabad, proving that education can transform marginalized lives into stories of agency and independence.

उमेदी सहरिया

परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर होने के कारण उमेदी सहरिया की पढ़ाई सरकारी हॉस्टलों में रहकर हुई। दसवीं कक्षा में अनुत्तीर्ण होने के बाद उमेदी ने सहरिया बालिका आवासीय शिविर में प्रवेश लिया। यहां शिक्षकों के मार्गदर्शन और सहयोग से नियमित पढ़ाई कर दसवीं परीक्षा पास की। दसवीं के बाद उमेदी अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती थी और सम्मानजनक सरकारी नौकरी करना चाहती थी। इसके लिए निरंतर पढ़ाई जारी रखना जरूरी था। उमेदी ने शिक्षा की मुख्यधारा से जुड़कर आवासीय विद्यालय किशनगंज से 12वीं परीक्षा पास की। विवाह के उपरांत भी उमेदी ने पति और ससुराल पक्ष के सहयोग से पढ़ाई निरंतर जारी रखी और बीएसटीसी सफलतापूर्वक पूर्ण की। इसके पश्चात 2022 में तृतीय श्रेणी शिक्षक के पद पर चयनित हुई। वर्तमान में वह शाहबाद के सिरसोद खुर्द गांव में प्राथमिक विद्यालय में अध्यापन का कार्य कर रही है। उमेदी की उपलब्धि यह सीख देती है कि यदि लगन, मेहनत और परिवार का साथ हो तो लड़कियों के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। उमेदी के पति भी सरकारी शिक्षक हैं और समाज में बालिकाओं की शिक्षा की पैरवी कर रहे हैं।

Growing up in Nayagaon village, Shahabad, Umedi Sahariya faced extreme poverty, where education was considered out of reach for most children. Despite this, she managed to complete her early schooling, but by class 10 in 2010–11, she feared it would all end. In 2012–13, with support from CECOEDECON's programs, she joined the residential school in Shahabad. Hostel life exposed her to disciplined study routines, nutritious meals, and cultural activities that gave her joy. Umedi especially loved writing and debates, which strengthened her confidence. Witnessing these changes, her family recognized the transformative value of education. Umedi asserted her desire to teach, refusing to let poverty dictate her path. With determination, she pursued training and was selected as a Teacher in government school, Sirsod Khurd village. Today, she inspires girls in her community, showing how education ensures dignity and sustainable development.

वनस्पती सहरिया

शाहबाद जिले के ढिकवानी गाँव की निवासी वनस्पति सहरिया की प्रारंभिक शिक्षा अपने गांव में ही हुई। पारिवारिक समस्याओं के कारण 9वीं कक्षा के बाद पढ़ाई जारी नहीं रह सकी। दो साल के अन्तराल के पश्चात आवासीय बालिका शिविर की जानकारी मिलने के बाद 2016-17 में प्रवेश लिया। वनस्पति ने आवासीय शिविर में मन लगाकर पढ़ाई की और साथ ही सिकोईडिकोन में जनसंगठनों के साथ होने वाले सामाजिक विकास के कामों की भी समझ बनी। वनस्पति ने मन लगाकर शिविर में रहकर पढ़ाई की और स्टेट ओपन बोर्ड में बारां जिले में सर्वाधिक अंक प्राप्त कर आवासीय शिविर का नाम रोशन किया। इस उपलब्धि के लिए स्टेट ओपन बोर्ड द्वारा वनस्पति को सम्मानित भी किया गया। वनस्पति ने 2017 में राजकीय आवासीय कन्या छात्रावास, शाहबाद में प्रवेश लेकर बारहवीं परीक्षा पास की। आगे चलकर ढिकवानी वर्ष 2022 में वनस्पति आशा सहयोगिनी के पद पर चयनित हुई। वनस्पति का मानना है कि सिकोईडिकोन के आवासीय शिविर में मिली सीख उसके जीवन की सबसे बडी उपलब्धी है।

From Dhikwani village in Baran district, Vanspati Sahariya grew up in a marginalized Sahariya family where survival meant farming and wage labor. She discontinued her studies after class 9 and remained at home for nearly two years. In 2016–17, she enrolled in CECOEDECON's residential school in Shahabad, where she resumed learning with renewed energy. Hostel life was a turning point—she participated in sports, prayers, and cultural events while excelling in academics. Vanspati's achievements made her family realize that girls' education was not a liability but an opportunity for the entire household. She asserted her will to study further and eventually excelled in state-level exams. Today, she works as an Asha Sahyogini at the Anganwadi centre in Dhikwani, Shahabad, embodying resilience and serving as a role model for young girls seeking socio-economic mobility through education.

विमला सहरिया

माँ बाड़ी केन्द्र बिरमानी में अध्यापिका के पद पर कार्य कर रही विमला के जीवन में बदलाव आवासीय शिविर में प्रवेश के बाद आया। यहां रहकर ही विमला ने पढ़ाई के महत्व को समझा। मजदूरी पर जीवन यापन करने वाले विमला के परिवार को आर्थिक रुप से मदद पहुंचाने के लिए शिक्षित होना जरुरी था। वर्ष 2009 में शिविर में प्रवेश लेने के बाद विमला ने समूह की अन्य बालिकाओं के साथ मिलजुलकर रहना, खेलना, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेना सीखा। विमला का पढ़-लिखकर आत्मनिर्भर बनने का सपना तब पूरा हुआ जब उसका चयन मां बाड़ी केन्द्र, बिरमानी पर अध्यापिका के रुप में हुआ। विमला आज यही संदेश देना चाहती है कि लड़कियों के शिक्षित होकर अपने पैरों पर खड़े होने से परिवार ही नहीं देश भी आगे बढ़ता है।

Vimala Sahariya, from Birmani village in Shahabad block, belonged to a household where wage labor was the mainstay, and girls' education was rarely prioritized. By 2009, after completing her primary classes, she felt her studies might come to an end due to the absence of a nearby school. That year, she joined CECOEDECON's residential school in Shahabad, which changed her story. The hostel gave her access to regular academics along with cultural programs, games, and prayers that built her confidence. Vimala particularly enjoyed debates and stage activities, which helped her overcome shyness. For her family, her progress was a revelation—they came to understand education as a foundation for empowerment. Vimala herself declared her aspiration to teach and worked consistently toward it. Today, she is a Teacher at Maa Badi Centre in Birmani, helping children and challenging long-standing gender norms in her community.

कविता जाटव

पारिवारिक परिस्थितियों के कारण कविता जाटव की 8वीं के बाद की पढ़ाई जारी नहीं रह सकी। दो वर्ष बाद कविता ने वर्ष 2011 में सिकोईडिकोन द्वारा संचालित बालिका शिविर में प्रवेश लिया। आगे बढ़ने और पढ़ने की अटूट इच्छा हो तो परमात्मा भी साथ देते हैं। कविता ने मन लगाकर अध्ययन किया। शिविर में उसे शिक्षकों का मार्गदर्शन भी मिला और अच्छी सहेलियों का समूह भी। शिक्षा के साथ-साथ स्वास्थ्य, पोषण, श्रमदान, खेलकूद और व्यायाम जैसी गतिविधियों ने कविता को समग्र विकास का वातावरण प्रदान किया। अपनी लगन, मेहनत और शिक्षकों के मार्गदर्शन से कविता ने दसवीं परीक्षा उत्तीर्ण की। आगे चलकर उसे पता चला कि वह आंगनबाड़ी कार्यकर्ता के लिए आवेदन कर सकती है तो उसने आवेदन किया और आज नया गांव, बीलखेड़ा डांग में इस पद पर कार्य कर अपने परिवार व समाज की लड़कियों को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दे रही है। कविता का मानना है कि बालिकाओं को हार नहीं माननी चाहिए बल्कि दृढ़ता से चुनौतियों का सामना कर अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए।

Kavita Jatav faced a long break in her education after class 8, forced by poverty and lack of opportunities in her village Bilkheda Dang. For two years she remained away from school, burdened by household responsibilities. But CECOEDECON's residential school in 2011 welcomed her back and gave her a second chance. Hostel life was filled with prayer, games, health awareness, and cultural programs that rebuilt her confidence. Slowly, her family realized that education was not a burden but an investment in their daughter's future. Kavita herself grew determined to keep learning, even dreaming of becoming a nurse to serve others. She often recalls that girls must never consider giving up as failure, but instead keep striving. Today, her persistence has given her dignity and income — she is employed as an Anganwadi Worker in Nayagaon, Bilkheda Dang, Shahabad, where she cares for children and motivates families towards education.

रेखा जाटव

स्थानीय स्तर पर शिक्षा की व्यवस्था ना होने के कारण वर्ष 2003 में रेखा जाटव ने बालिका शिविर में प्रवेश लिया। रेखा का मानना है कि अगर वह बालिका शिविर में प्रवेश न लेकर पढ़ाई जारी नहीं रखती तो बकरियाँ ही चराती रहती। शिविर में होने वाली विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं, श्रमदान व सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने रेखा के समग्र विकास में मदद की। खेती-बाड़ी से गुज़ारा करने वाले रेखा के परिवार ने भी पढ़ाई के महत्व को समझा और रेखा की पढ़ाई जारी रहने दी। रेखा आज बैंहटा में स्वास्थ्यकर्मी के रूप में सेवाऐं दे रही है और न केवल स्वास्थ्य के प्रति बल्कि बालिका शिक्षा और लड़कियों की आत्मनिर्भरता के प्रति भी समाज को जागरुक कर रही है।

Rekha Jatav, from Bainhata village in Shahabad block, had her studies interrupted because her village lacked higher educational facilities. Her father worked as a farmer, and poverty threatened to end her learning journey. In 2005, she enrolled in CECOEDECON's residential school in Shahabad, which became her lifeline. At the hostel, she enjoyed reading, playing kho-kho, kabaddi, and participating in cultural programs. She also developed an interest in computers, which gave her a new vision of the future. Her parents, once hesitant, saw her progress and realized how valuable education was. Rekha herself insisted on continuing, determined to find work that matched her abilities. She dreamed of writing and securing a small dignified job. Today, her persistence has been rewarded—she works as a Health Worker in Bainhata, showing that education can turn aspirations into reality.

राजो बाई जाटव

यदि दृढ़ निश्चय हो तो कृषि, मजदूरी के काम करते हुए भी पढ़ाई के लिए समय निकाला जा सकता है, यह कहना है राजोबाई जाटव का जिसने 10वीं में अनुत्तीर्ण होने के बाद विपरीत आर्थिक परिस्थितियों में न केवल दसवीं की परीक्षा पास की बल्कि तिलगवां में स्वास्थ्यकर्मी के पद पर भी चयनित होकर सहरिया समुदाय में शिक्षा के महत्व का संदेश दिया। राजोबाई ने 2015 में सरकार के सहयोग से ड्रॉप आउट बालिकाओं के लिए संचालित बालिका शिविर में प्रवेश लिया, मन लगाकर पढ़ाई भी की और खेलकूद, भ्रमण, सांस्कृति कार्यक्रमों में भी भाग लिया। सिकोईडिकोन संस्था में रहकर पढ़ने से सामाजिक विकास के कामों का संस्कार भी मिला। स्वास्थ्यकर्मी तिलगवां (म.प्र.) के रुप में राजोबाई महिलाओं को पोषण व स्वास्थ्य के साथ- साथ बालिकाओं की पढ़ाई निरंतर जारी रखने के लिए भी जागरुक कर रही है।

Rajo Bai Jatav, from Tilgawan village, faced immense hurdles in her childhood. Her family, dependent on farming and labor, could not afford to send her to school regularly. She discontinued studies after she was unable to progress beyond class 10thinking education was no longer possible. In 2015, she joined CECOEDECON's residential school in Shahabad, which revived her dreams. At the hostel, she loved cultural programs, sports, and debates, which gave her confidence to speak up. For her parents, seeing her perform well was a turning point—they realized education was not just for boys but equally important for girls. Rajo Bai herself became determined, openly asserting that she would keep studying and seek employment. Today, her determination has borne fruit. She proudly works as a health worker in Tilgawan, inspiring younger girls to balance education with responsibilities and never lose hope.

शारदा भील

दसवीं में अनुत्तीर्ण होने के बाद शारदा ने घर पर काम-काज करना और शिक्षा को आगे बढ़ाना में से शिक्षा को चुना। उसके इस चुनाव को सही साबित किया बालिका शिविर ने, जहाँ वर्ष 2012 में शारदा ने प्रवेश लिया और नौकरी करने के सपने को पूरा करने की ओर कदम बढ़ाया। शारदा ने बालिका शिविर में अनुशासन और सुरक्षा के वातावरण में अपनी दसवीं की पढ़ाई की। शिक्षकों के मार्गदर्शन और सहयोग से दसवीं परीक्षा पास की। दसवीं पास करने के बाद आंगनबाड़ी कार्यकर्ता के लिए आवेदन किया और चयनित भी हुई। वर्तमान में नीममडी में कार्य कर रही शारदा का कहना है कि दसवीं कक्षा पास करना मेरे लिए मील का पत्थर साबित हुआ। अगर दसवी पास न होती तो नौकरी भी नहीं मिल पाती। शारदा अपने समुदाय की बालिकाओं को पढ़ने और आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित कर रही है।

Sharda Bheel, from Neemmadi village, grew up in a farming household where education was never a priority. Poverty and responsibilities forced her to discontinue after class 10, leaving her dreams unfulfilled. In 2012, she joined CECOEDECON's residential school in Shahabad, which became the turning point in her life. At the hostel, she enjoyed studying, playing games, and participating in cultural programs. She also cherished prayers and folk performances that built her confidence. Her parents, once indifferent, realized the importance of education when they saw her growth. Sharda herself asserted her right to continue learning, determined not to be limited by social and economic barriers. She nurtured the dream of a job that would secure her dignity. Today, Sharda works as an Anganwadi Worker in Neemmadi village, serving children and empowering other women to see education as a pathway to resilience and change.

ममता जाटव

ममता जाटव को जब पता चला कि दसवीं में अनुत्तीर्ण छात्राओं के लिए सिकोईडिकोन संस्था द्वारा एक आवासीय शिविर संचालित किया जा रहा है जिसमें दसवीं परीक्षा की तैयारी के साथ-साथ समग्र विकास के गुर भी सिखाए जाते हैं तो ममता की यह चिंता दूर हुई कि वह आगे कैसे पढ़ सकेगी। वर्ष 2009 में सरकार के सहयोग से सिकोईडिकोन द्वारा चलाए जा रहे शिविर में प्रवेश लेने के बाद ममता को सबसे अच्छी बात यह लगी कि शिविर में लड़कियों की सुरक्षा की बहुत अच्छी व्यवस्था थी। यहां होने वाले खेलकूद, व्यायाम व अन्ताक्षरी जैसे कार्यक्रम और समूह में साथ मिलकर पढ़ाई और अन्य गतिविधियों में भाग लेने से ममता का आत्म विश्वास भी बढ़ा। ममता ने मेहनत और लगन से दसवीं की परीक्षा पास की। ममता अध्यापिका बनना चाहती थी। उसका यह सपना तो पूरा नहीं हो सका मगर आंगनबाड़ी कार्यकर्ता के रुप में ममता छोटे बच्चों की शिक्षा और पोषण का काम मन लगाकर कर रही है। पुरैनी में ममता का मानना है कि बालिकाओं की उच्च शिक्षा, उनके स्वावलंबन के लिए बहुत आवश्यक है। ममता की उपलब्धी से उनके पति भी बहुत खुश है।

From Puraini village in Shahabad block, Mamta Jatav struggled to continue her education after unsuccessful attempt at class 10 exams, as poverty and her father's labor income left the family with little to spare. In 2009, she joined CECOEDECON's residential school in Shahabad, where she resumed her studies with new hope. She loved playing games, joining prayers, and participating in cultural events at the hostel, which gave her joy and confidence. Her family, watching her determination, realized that education could transform not only Mamta's life but also their future. Mamta openly asserted her ambition to become a teacher, determined not to let poverty end her journey. With persistence, she completed her studies and pursued teacher training. Today, she proudly works as an Anganwadi worker in Puraini village, proving that education through the residential school can create empowered women leaders.

मौसमी सहरिया

दसवीं में अनुत्तीर्ण होने के बाद मौसमी के परिवार की स्थिति ऐसी नहीं थी कि वो उसे आगे पढ़ा सकें। लेकिन जब आवासीय बालिका शिविर की जानकारी मिली तो मौसमी की आशा बंधी और वर्ष 2013 में शिविर में प्रवेश लिया। मौसमी पढ़-लिखकर सरकारी नौकरी करना चाहती थी ताकि परिवार को आर्थिक मदद भी कर पाए और एक सुरक्षित जीवन सुनिश्चित कर सके। शिविर में मौसमी को पढ़ाई के अलावा खेलकूद, योगा, भ्रमण, व्यायाम आदि के माध्यम से समग्र विकास का अवसर मिला। शिविर में रहकर पढ़ाई करते हुए दसवीं की परीक्षा पास की। कुछ समय बाद मौसमी को सरकारी नौकरी में जाने का अवसर मिला। उसका चयन ग्राम विकास अधिकारी के पद पर हो गया। मौसमी आज खण्डेला पंचायत में ग्राम विकास अधिकारी बनकर अपनी सफलता से खुश है और मानती है कि जीवन में असफलता का सामना तो सभी को करना पड़ता है मगर हमें हार नहीं माननी चाहिए।

Mausami Sahariya, from Garada village in Kishangaing block, grew up in a family of daily wage workers where survival always came before schooling. She discontinued her studies because she was unable to clear 10th standard exams. But in 2013, she entered CECOEDECON's residential school in Shahabad, which re-integrated her into formal education. At the hostel, Mausami found joy in games, prayers, yoga, and drawing, which gave her both confidence and balance. For her, the residential camp was not just about books—it was about dignity and building resilience. Her family, once skeptical, recognized the importance of education when they saw her growth. Mausami asserted her wish to pursue higher education, determined to obtain a government job. Today, she serves as a Village Development Officer (Gram Vikas Adhikari) in Khandela, a role that allows her to contribute to rural governance and empower other marginalized girls to dream big.

रेखा जाटव

''सब बालिकाएं पढ़ें और आगे बढ़ें'' का संदेश देने वाली रेखा जाटव का सपना था कि वो आंगनबाड़ी कार्यकर्ता बने। मगर जब दसवीं में अनुत्तीर्ण हुई तो उसे निराशा हुई। फिर वर्ष 2012 में आवासीय शिविर में प्रवेश लिया। मेहनत करके यहां से दसवीं की कक्षा पास की। यहाँ अन्य बालिकाओं के साथ रहकर खेलना, व्यायाम करना, भ्रमण पर जाना उसे अच्छा लगता था। जब दसवीं की कक्षा पास की तो लगा कि अब वह कोई नौकरी करने के योग्य हो गई है। कुछ साल बाद उसका सपना भी पूरा हुआ और आंगनबाड़ी सहायिका के रुप में उसका चयन हुआ। डेरवारा (म.प्र.) में अपनी सेवाऐं देते हुए रेखा गांव की महिलाओं और परिवारों को बालिका शिक्षा के प्रति जागरुक कर रही है।

Rekha Jatav from Derwara(M.P) village in Shahabad block, had to pause her studies after being unable to clear class 10 exams, poverty and her family's dependence on farming and wage labor. In 2012, she joined CECOEDECON's residential school in Shahabad, which brought her back to mainstream education. Hostel life was a new world for Rekha—she enjoyed yoga, sports, computer lessons, and cultural programs while living among peers. She particularly loved excursions and prayer sessions, which strengthened her discipline. Her family, seeing her progress, realized that education could transform not only Rekha's life but the entire household's prospects. Rekha herself declared that she would one day work in Anganwadi services, refusing to let poverty hold her back. Today, she has fulfilled that dream and works as an Anganwadi Helper in Derwara(M.P), inspiring other girls to study further and excel in all walks of life.

राजकुमारी सहरिया

गांव में शिक्षा की कोई व्यवस्था ना होने के कारण राजकुमारी सहरिया ने वर्ष 2008 में बालिका शिविर में प्रवेश लिया। परिवार की आजीविका केवल खेती-बाड़ी पर आश्रित थी, इसलिए राजकुमारी पढ़-लिखकर अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती थी। शिविर में प्रेवश के उपरांत यहां उसे पढ़ाई के साथ-साथ अनुशासन, सहभागिता, समानता जैसे मूल्यों की समझ भी हुई। शिक्षकों के मार्गदर्शन और अनुकूल वातावरण में राजकुमारी ने दसवीं की परीक्षा पास की। अब उसके पास एएनएम बनने की योग्यता थी। कुछ समय बाद उसने उनी में ए एन एम के लिए आवेदन किया और उसका चयन भी हो गया। राजकुमारी अपने गांव की लड़कियों को पढ़ाई न छोडने के लिए प्रेरित करती है क्योंकि शिक्षा से ही स्वावलंबन का रास्ता खुलता है।

Rajkumari Sahariya, from Khamantha in Shahabad block, experienced many barriers in her education. Her studies came to a halt after class 10, when she could not progress further due to academic and financial constraints. In 2008, she joined CECOEDECON's residential school in Shahabad, which offered her a second chance to continue learning. At the hostel, she enjoyed sports, prayers, and cultural programs, which gave her strength and confidence. For her family, who depended on farming and labor, watching Rajkumari's growth was eye-opening—they began to understand the importance of girls' education. Rajkumari herself asserted her dream of becoming a teacher, showing courage in the face of difficulties. Today, she is employed as an ANM in Sub Centre, Uni, Shahabad, empowering children and families in her village, and proving that education—even after setbacks—can open new doors to empowerment.

गायत्री सहरिया

मजदूरी के लिए परिवार सहित पलायन करने कारण गायत्री की पढ़ाई में रुकावट आ गई थी। जब गायत्री के परिवारजनों को बालिका आवासीय शिविर की जानकारी मिली तो उन्हें भी लगा कि यहाँ के सुरक्षित वातावरण में गायत्री की पढ़ाई हो सकेगी। यहाँ वर्ष 2008 में गायत्री ने प्रवेश लिया। प्रवेश के बाद यहाँ अन्य बालिकाओं के साथ गायत्री को पढ़ाई के अलावा प्रार्थना सभा, व्यायाम, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी भाग लेना अच्छा लगता था। शिविर में मिली सीख उसके सदैव काम आई। पढ़ाई के पश्चात शिक्षक भर्ती परीक्षा में जुट गई। मेहनत रंग लाई और गायत्री अध्यापिका के पद पर चयनित हुई। गायत्री आज उच्च प्राथमिक विद्यालय, पगारा, किशनगंज में अध्यापन का कार्य कर रही है और विद्यार्थियों को शिक्षा से स्वावलंबन का पाठ पढ़ा रही है। गायत्री का कहना है कि अगर निश्चय कर लें तो शादी के बाद भी मंजिल पाई जा सकती है।

Gayatri Sahariya, from Pagara village in Kishanganj block, saw her education interrupted after class 9, when the absence of a hostel and financial struggles forced her to step away. By 2008, she found hope again through CECOEDECON's residential school in Shahabad, which gave her a platform to resume learning. At the hostel, she enjoyed prayers, games, and cultural activities, while community gatherings inspired her to speak with confidence. Despite challenges, Gayatri's parents came to realize the transformative role of education and supported her aspirations. Gayatri herself asserted her wish to become a teacher, believing education would bring dignity and independence. With persistence, she achieved her dream. Today, she is a Teacher at Govt. School, Pagara, Kishanganj, motivating children and showing families in her community that girls' education can indeed break intergenerational cycles of poverty.

उषा सहरिया

अपने संघर्ष और मेहनत से राजस्थान पुलिस बारां में कांस्टेबल के पद पर कार्यरत उषा सहरिया अपने समाज में शिक्षा से स्वावलंबन की मिसाल है। उषा की सफलता का सफर आसान नहीं था। गांव में शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं थी। परिवार की आजीविका भी सिर्फ खेती पर निर्भर थी। उषा पढ़ना चाहती थी और अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती थी। किसी परिचित की सलाह पर आवासीय शिविर में वर्ष 2005 में प्रवेश लिया। प्रवेश के पश्चात उषा के सपनों को पंख लगे। उषा ने पढ़ाई के साथ-साथ अन्य गतिविधियों में भी भाग लिया, जिससे आत्मविश्वास जागा। पढ़ाई के बाद राजस्थान पुलिस में कांस्टेबल की परीक्षा की तैयारी की। अपनी मेहनत से वह सफल हुई और खुशियों के दरवाजे खोले। शिक्षा से स्वावलंबन की यह कहानी सहरिया बालिकाओं के लिए प्रेरणास्रोत है।

Usha Sahariya's path to education was filled with obstacles. Her family relied on farming, and with no hostel in her village, she had to discontinue after class 9. In 2005, she enrolled in CECOEDECON's residential school in Shahabad, which became the foundation of her journey. At the hostel, she enjoyed sports, painting, and cultural activities that built her confidence. For her parents, initially unsure about girls' schooling, seeing Usha's achievements was a revelation. They realized that education could become an asset, not a burden. Usha herself was clear—she dreamed of government service and prepared with determination. Her persistence paid off. Today, she works as a Constable in Rajasthan Police, proving that education and resilience can empower marginalized girls to overcome systemic barriers and achieve dignified livelihoods.

उर्मिला सहरिया

बच्चों के पोषण युक्त आहार और उनकी शिक्षा की पैरवी करने वाली उर्मिला सहरिया ने 9वीं कक्षा में अनुत्तीर्ण होने के पश्चात ड्रापआउट सहरिया बालिकाओं के लिए संचालित आवासीय शिविर में 2015 में प्रवेश लिया। परिवार की रोजी-रोटी मजदूरी व खेती से चलती थी। उर्मिला ने हिम्मत नहीं हारी और शिविर में प्रवेश के बाद दसवीं पास करने की तैयारी में जुट गई। यहाँ उर्मिला को शिक्षकों का मार्गदर्शन व अन्य छात्राओं का सहयोग मिला। दसवीं की परीक्षा सफलतापूर्वक पास की। उर्मिला आगे चलकर अध्यापिका बनना चाहती थी मगर उसका चयन आशा सहयोगिनी डांका वाटका के पद पर हो गया। वह अपने काम से खुश है और अपने समाज की बेटियों को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित कर रही है।

Urmila Sahariya, from Garada village, grew up in a family dependent on farming and daily wage labor. After facing academic difficulties in class 9, her education almost came to an end. In 2015, she joined CECOEDECON's residential school in Shahabad, which gave her a fresh chance. Hostel life encouraged her to study with focus, while she also enjoyed sports, cultural programs, and excursions. Urmila especially loved drama and games, which strengthened her confidence. Watching her progress, her family began to understand that education was vital for their daughter's future. Urmila herself asserted her dream of becoming a teacher, determined not to let poverty or early setbacks stop her. Today, she proudly fulfills that aspiration, working as an Anganwadi Worker Danda vatka village, supporting children with education and nutrition while inspiring girls to never lose hope.

सलोचना सहरिया

पढ़-लिखकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देने वाली सलोचना सहरिया सरकारी नौकरी पाना चाहती थी। 9वीं कक्षा में अनुत्तीर्ण होने के बाद उसे लगा कि वह अपना सपना पूरा नहीं कर सकेगी। मगर सरकार के सहयोग से सिकोईडिकोन द्वारा ड्राप आउट सहरिया बालिकाओं के लिए संचालित आवासीय शिविर में वर्ष 2015 में प्रवेश लेने के बाद उसका आत्मविश्वास जागा। शिविर में अन्य बालिकाओं के साथ पढ़ते हुए स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का वातावरण और योग्य शिक्षकों का मार्गदर्शन मिला। सलोचना ने सफलतापूर्वक दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की। दसवीं करने के बाद राजस्थान पुलिस में कांस्टेबल की परीक्षा में बैठी और परीक्षा पास कर खाकी वर्दी पहनने का गौरव प्राप्त हुआ। पुलिस लाइन बारां में कार्यरत इस गरीब माँ-बाप की बेटी ने अपना सम्मान तो बढ़ाया साथ ही परिवार का गौरव भी बढ़ाया।

Salochana Sahariya from Danta village, faced poverty and lack of access to schools, which made continuing education nearly impossible. By class 9, her studies were interrupted, and she feared she would never progress further. In 2015, she entered CECOEDECON's residential school in Shahabad, where structured study, nutritious food, and extracurricular activities brought her back to mainstream education. She loved sports, drawing, and cultural events, which made her more confident. Slowly, her parents began to realize that their daughter's education could transform the entire family's future. Salochana herself asserted that she would pursue government service, believing education was her pathway to independence. Today, she has realized that dream, working as a Constable in Rajasthan Police. Her journey reflects resilience and highlights how access to residential schooling can break cycles of marginalization for Sahariya girls.

अनीता जाटव

शाहबाद के गांजन गांव की अनीता जाटव ने वर्ष 2014 में सिकोईडिकोन के आवासीय शिविर से 10वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के मन से प्रवेश लिया। पूर्व में 10वीं कक्षा पास न करने के कारण अनीता के मन में यह संदेह था कि पता नहीं वह दसवीं कक्षा पास कर पाएगी या नहीं। परन्तु आवासीय शिविर में प्रवेश लेने के पश्चात अनीता का खोया हुआ विश्वास जागने लगा। शिविर में रहते हुए उसने संवाद करना सीखा, साथ ही व्यायाम, श्रमदान का महत्व समझा। समूह में रहकर अनीता ने संगठन व नेतृत्व के गुण भी सीखे। आपस में मिलकर छोटी-छोटी समस्याओं के समाधान निकालना भी यहीं सीखा। अनीता चाहती थी कि वह पढ़-लिखकर अपने पांवों पर खड़ी हो जाए ताकि घर में आर्थिक मदद भी कर सके। राजस्थान स्टेट ओपन से संस्था द्वारा अनीता का फार्म भरवाया गया और शिविर में दसवीं की परीक्षा की तैयारी करवाई गई। अन्य लड़कियां भी अनीता के साथ दसवीं की तैयारी में जुट गई जिससे एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का वातावरण तैयार हुआ। अनीता की मेहनत रंग लाई और 10वीं की परीक्षा उत्तीर्ण हुई। आज अनीता विवाह के उपरांत छिपोल गांव में आशा सहयोगिनी के पद पर कार्यरत है। अनीता का कहना है कि अगर वह दसवीं कक्षा उत्तीर्ण नहीं करती तो उसके लिए यहां तक पहुंचना संभव नहीं हो पाता।

Anita Jatav belonged to a farming family where poverty and responsibilities often over shadowed her childhood dreams. Although she loved studying, she had to stop after she was unable to clear class 10 exams and marriage came early. It felt like her education had ended. But joining CECOEDECON's residential school in 2014 gave her a second chance. There, she resumed studies, took part in games and cultural activities, and gained the confidence to believe in herself. Her family, seeing her progress, realized the importance of education and supported her. Anita too asserted that she would not give up on learning again. The residential school became the turning point of her life. Today, she motivates other girls to continue their education and proudly works as an Asha Sahyogini in Chipol, guiding women and children in her community.

मनीषा सहरिया

दसवीं कक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाने पर मनीषा सहरिया की शिक्षा को लेकर अनिश्चितता के बादल छा गए। परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण पढ़ाई जारी रखना मुश्किल था। जब सरकार के सहयोग से सिकोईडिकोन द्वारा चलाए जा रहे ड्राप आऊट सहरिया बालिकाओं के आवासीय शिविर की जानकारी मिली तो मनीषा को उम्मीद लगी कि वह दसवीं की पढ़ाई जारी रख सकती है। शिविर में वर्ष 2017 में प्रवेश लिया और योग्य शिक्षकों एवं सहभागी वातावरण में मनीषा की पढ़ाई शुरु हुई। मनीषा की मेहनत रंग लाई और राजस्थान स्टेट ओपन से दसवीं परीक्षा उत्तीर्ण की। दसवीं करने के बाद मनीषा राजस्थान पुलिस में जाना चाहती थी। उसका यह सपना तो पूरा नहीं हो सका मगर ए एन एम के पद पर उसका चयन हुआ। वर्तमान में बकनपुरा उपस्वास्थ्य केन्द्र पर अपनी सेवाएं दे रही है और ग्रामीण क्षेत्र में बालिका शिक्षा और स्वावलंबन की अलख जगा रही है।

Manisha Sahariya, from Arjunpura village in Shahabad block, faced immense struggles when her studies paused after class 10 exam results. Poverty and family dependence on labor left little scope for continuing education. In 2017, she joined CECOEDECON's residential school in Shahabad, which reconnected her to mainstream learning. She loved playing games, joining cultural programs, and attending prayers, while the hostel also gave her exposure to health awareness and confidence-building activities. Watching her transformation, her family realized the importance of education and began to support her dreams. Manisha herself asserted her goal of securing dignified government employment, refusing to let hardships limit her. With determination, she went on to join the Auxiliary Nurse Midwife (ANM) Sub-Centre in Bakanpura, where she works today. Her story demonstrates how timely educational supports resilience, empowerment, and socio-economic mobility for marginalized girls.

कमला भील

विवाह के उपरांत मध्य प्रदेश के करियादेह गांव में आशा कार्यकर्ता के रूप में कार्य कर रही कमला भील ने गांव में स्कूल न होने के कारण वर्ष 2004 में आवासीय बालिका शिविर में प्रवेश लिया। शिविर में कमला को पढ़ाई के अलावा खेलकूद में बहुत रुचि थी। वह खेलकूद प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती थी। खेती-मजदूरी से जीवनयापन करने वाले कमला के परिवाजन भी शिविर के सुरक्षित वातावरण से संतुष्ट थे। कमला ने शिविर से पढ़ाई के उपरांत आशा कार्यकर्ता के लिए आवेदन दिया और चयनित हुई। कमला आशा कार्यकर्ता के रूप में मिलने वाले अपने मानदेय से परिवार को भी मदद पहुँचा रही है। साथ ही गर्भवती महिलाओं को भी पोषण और शिक्षा के प्रति जागरुक कर रही है। कमला मानती है कि वर्तमान समय में बालिकाओं को अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए।

Kamla Bheel, from Kariyadeh village in Madhya Pradesh, grew up in a community where there was no school nearby and poverty forced her family into farming and labor. Her studies ended abruptly after class 9, leaving her dreams unfulfilled. In 2004, she joined CECOEDECON's residential school in Shahabad, which gave her a new beginning. At the hostel, Kamla enjoyed cultural programs, sports, and group prayers, which helped her rebuild confidence and discipline. Her parents, once unconvinced about girls' education, began to value it when they saw her progress. Kamla herself asserted her desire to work with dignity and aspired to contribute to her community. With persistence, she succeeded, and today she is employed as an Asha Sahyogini in Kariyadeh village, Madhya Pradesh, where she supports women and children while inspiring young girls to continue their education despite barriers.

बतिया जाटव

दसवीं की परीक्षा पास न कर पाने के कारण बतिया जाटव ने वर्ष 2009 में सिकोईडिकोन के आवासीय शिविर में प्रवेश लिया। शिविर में सामूहिक प्रार्थना, खेलकूद व व्यायाम में बतिया का मन लगने लगा। पाठ्य पुस्तकों के अलावा शिविर में व्यावहारिक ज्ञान से भी परिचित हुई। आवासीय शिविर में मिले सकारात्मक वातावरण से बतिया को आगे बढ़ने और अपने पैरों पर खड़े होने की प्रेरणा मिली। जब दसवीं की परीक्षा पास की तो उसे नौकरी कर सकने का विश्वास पैदा हुआ। आज बतिया महोदरा में आंगनबाड़ी सहायिका के पद पर कार्यरत है और बच्चों को निरंतर पढ़ाई जारी रखने के लिए प्रेरित कर रही है। यद्यपि उसे मलाल है कि वो पुलिस में नहीं जा सकी मगर वो चाहती है कि उसके गांव की लड़कियां पुलिस जैसी चनौतीपूर्ण नौकरियों में भी जाए और गांव का नाम रोशन करें।

Batiya Jatav grew up in a poor family that depended on farming and labor work. Financial struggles made it difficult for her to study beyond class 10, and she nearly dropped out completely. She loved learning but felt helpless when opportunities closed. Her life changed when she joined CECOEDECON's residential school in 2009, which brought her back to mainstream education. Hostel life allowed her to study in a safe environment, while games, prayers, and cultural activities gave her joy and confidence. Her family, initially unsure, soon realized the value of her progress and encouraged her to continue. Batiya herself asserted that she wanted to pursue education despite hardships, building resilience in the process. Today, she inspires young girls by showing what determination can achieve and is currently employed as an Anganwadi Helper in Mahodara, supporting children and families in her community.

दिव्या सहरिया

गांव की अन्य बालिकाओं से जब दिव्या सहरिया को सरकार के सहयोग से सिकोईडिकोन द्वारा चलाए जा रहे आवासीय शिविर की जानकारी मिली तो 9वीं कक्षा अनुत्तीर्ण होने के बाद उसे अपनी पढ़ाई जारी रख दसवीं पास करने की आस बंधी। दिव्या ने वर्ष 2017 में शिविर में प्रवेश लिया। यहाँ अन्य बालिकाओं के समूह के साथ पढ़ना, खेलना, श्रमदान करना दिव्या को बहुत अच्छा लगता था। दिव्या ने शिविर में रहते हुए विभिन्न अवसरों पर संस्था के सामाजिक विकास के कार्यों में भी भाग लिया। यहाँ पढ़ाई के साथ-साथ पोषण, स्वास्थ्य, पर्यावरण जैसे विषयों पर भी समझ बनी। सुखद माहौल और शिक्षकों के मार्गदर्शन में दिव्या ने दसवीं पास की। दसवीं के बाद दिव्या सरकारी नौकरी करना चाहती थी। कुछ समय बाद उसे वह अवसर मिला और शाहबाद में ए एन एम के रुप में उसका चयन हुआ। दिव्या के पति भी उसकी उपलब्धी से खुश हैं। दिव्या सभी बालिकाओं से कहती है कि यदि असफल हो जाओ तो कभी भी हार मत मानों।

Divya Sahariya, from Khatka village in Shahabad block, had her education disrupted when she could not clear class 9 examinations and feared her schooling was over. In 2017, she enrolled at CECOEDECON's residential school in Shahabad, where she regained confidence and returned to mainstream learning. At the hostel, she found joy in cultural programs, sports, and games, while the monthly hostel gatherings became her favourite moments of belonging. Divya herself openly expressed her ambition of securing a government position and continued her studies with determination. Today, she has achieved dignified employment and works as an Auxiliary Nurse Midwife (ANM) in Community Health Centre, Shahbad. Her story reminds young girls that setbacks in academics do not define their future—resilience and opportunity can lead to empowerment.

आशा भील

गांव में शिक्षा की व्यवस्था न होने के कारण आशा भील ने वर्ष 2008 में आवासीय शिविर में प्रवेश लिया। शिविर में प्रवेश के उपरांत आशा की कई सहेलियाँ बन गई, जिनके साथ उसका मन लगने लगा और शिविर में होने वाली विभिन्न गतिविधियों से उसकी नेतृत्व क्षमता भी विकसित हुई। कई बार घर से बाहर रहने के कारण शिविर की अन्य बालिकाओं को घर की याद आने लगती तो उनको समझाने व संभालने का दायित्व बखूबी निभाती थी। यहीं से आशा को दूसरों की मदद करने का संस्कार भी मिला। आशा ने शिविर से सफलतापूर्वक पढ़ाई के पश्चात आशा कार्यकर्ता के लिए आवेदन किया और चयनित हुई। विवाह के उपरांत आशा आज मध्यप्रदेश के डीगडोली गांव में सेवाएं दे रही है और आर्थिक स्वावलंबन के साथ महिलाओं की मदद भी कर रही है।

From Digdoli village, Madhya Pradesh, Asha Bheel belonged to a family dependent on agriculture and labor. Schooling opportunities were absent in her village, and she thought her education would never continue. In 2008, she joined CECOEDECON's residential school in Shahabad, where she re-entered mainstream education. She cherished hostel life—group prayers, sports, computer lessons, and cultural activities all became steppingstones in her journey. Asha was particularly touched by the bonds created with girls who shared similar struggles; for her, it was both learning and emotional support. Her family, once indifferent, gradually realized that educating daughters could transform lives. Asha asserted her dream to serve women and children through community services. Today, she is fulfilling that goal as an Asha Sahyogini in Digdoli, Madhya Pradesh, empowering women's health and inspiring girls to never abandon their education.

राजन्ती सहरिया

आगे पढ़ने और कुछ बनने की ज़िद हो तो मुसीबतें भी अवसर बन जाती है। राजन्ती सहरिया के परिवार की गरीबी और कठिन परिस्थितियां ऐसा ही अवसर बनकर आई। गांव में शिक्षा व्यवस्था न होने के कारण वर्ष 2012 में आवासीय शिविर में प्रवेश लिया। यहाँ प्रवेश लेना उसके लिए जिन्दगी बदल देने वाला अवसर साबित हुआ। यहाँ शिक्षा के साथ-साथ होने वाले व्यायाम, खेलकूद, श्रमदान जैसे कार्यक्रमों ने अनुशासन का पाठ पढ़ाया। मेहनत और लगन से पढ़ाई की और खुद को काबिल बनाने की ओर कदम बढ़ाया। राजन्ती ने शिविर से पढ़ाई के उपरांत राजस्थान पुलिस में कांस्टेबल की परीक्षा दी और सफलतापूर्वक चयनित हुई। बारां में कांस्टेबल पद पर नियुक्त राजन्ती की पुलिस की वर्दी देख समाज की अन्य बालिकाऐं भी आज उसकी तरह गौरवपूर्ण सम्मान पाना चाहती हैं, आत्मनिर्भर बनना चाहती हैं।

Rajanti Sahariya, from Sambalpur village grew up where schooling facilities did not exist, and her family survived on farming and daily wage labor. Her education was interrupted early, but in 2012 she joined CECOEDECON's residential school in Shahabad, which gave her a second chance. Hostel life offered structure and exposure—she loved sports, cultural events, and excursions, while tailoring classes helped her build practical skills. Her parents, watching her transformation, began to value education, something they had never prioritized before. Rajanti herself developed confidence and asserted that she wanted to achieve dignified employment. Over time, her dedication bore results, and today she proudly works as a Constable in Rajasthan Police Line at Baran, breaking gender barriers and motivating other girls in her community to aim higher in education without fearing setbacks.

रूक्मणी सहरिया

रुक्मणी सहरिया ने वर्ष 2005 में आवासीय शिविर में प्रवेश लिया। यहाँ प्रवेश लेने के बाद रुक्मणी को विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने का अवसर मिला। अनुशासन में पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी रुक्मणी रुचि से भाग लेती थी। शिक्षा के साथ-साथ सफाई व श्रमदान का महत्व भी समझा। रुक्मणी ने मेहनत करके अपनी पढ़ाई जारी रखी। इसी का परिणाम है कि आज वह राजस्थान उच्च प्राथमिक विद्यालय, किराड़ में अध्यापिका के पद पर कार्यरत है। रुक्मणी बालिका शिक्षा और आत्मनिर्भरता का आदर्श उदाहरण है जो अन्य बालिकाओं के लिए भी प्रेरणास्रोत है।

Rukmani Sahariya from Beechi village, grew up in a family dependent on farming and wage labor. With no hostel nearby, she was forced to leave her studies midway, even though she had the desire to continue. In 2005, she enrolled at CECOEDECON's residential school in Shahabad, which gave her the opportunity to return to mainstream education. The hostel environment offered her not just academics but also activities like drama, painting, games, and excursions, which she thoroughly enjoyed. Witnessing her growth, her parents realized that education could transform her future, and they began to support her aspirations. Rukmani asserted her dream of becoming a teacher. Today, she works as a Teacher in Govt. Middle School, Kirad Pahadi, proving that with resilience and the right support, barriers to education can be broken, and aspirations turned into reality.

सिकोईडिकोन

सिकोईडिकोन (सेन्टर फॉर कम्यूनिटी इकोनोमिक्स एण्ड डेवलपमेंट कन्सलटैंट्स सोसायटी) एक गैर सरकारी संगठन है। इसकी स्थापना वर्ष 1982 में हुई थी। यह संगठन समाज के निर्धन और वंचित वर्गों की क्षमता निर्माण के कार्य के प्रति समर्पित है। संस्था कृषि, आजीविका, शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, जलवायु परिवर्तन से जुड़े विकास के विभिन्न मुद्दों पर राजस्थान के 11 जिलों में कार्य कर रही है। सिकोईडिकोन के प्रयासों और पहलों का दायरा राजस्थान में सहभागी समुदायों की क्षमता का निर्माण करने से लेकर राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर रचनात्मक संवाद के मंच तैयार करने तक फैला हुआ है। अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने में सिकोईडिकोन अपने बाह्य एवं सहयोगी संगठनों की भागीदारी से कार्य करता है। सतत् विकास से जुड़े विभिन्न मुद्दों की पैरवी करते हुए सिकोईडिकोन राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय को प्रभावित करने वाले नीति सम्बन्धी मुद्दों को आगे बढ़ाने हेतु भी प्रयासरत है।

UNIQUE PRINT IN • 9414363099

cecoedecon
Where Action Speaks Louder than Words

Centre For Community Economics and Development Consultants Society

F-159-160, Industrial Area, Sitapura- 302022, Jaipur
Tel: 0141-2771855/7414038811/7414038822
Fax: 0141-2770330 E-mail : cecoedecon@ gmail.com